प्रभात

NATIONAL BESTSELLER

NCERT

सार संकलन

(कक्षा VI-XII सहित)

UPSC, UPPSC, BPSC, JPSC, MPPSC
एवं अन्य सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए
समान रूप से उपयोगी

इतिहास, विश्व एवं भारत का भूगोल, भारतीय राजव्यवस्था, भारतीय अर्थव्यवस्था, सामान्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, बेसिक सामान्य ज्ञान

ONE LINER

डॉ. मनीष रंजन (IAS)

NATIONAL BESTSELLER

NCERT

सार संकलन

(कक्षा VI-XII सहित)

UPSC, UPPSC, BPSC, JPSC, MPPSC
एवं अन्य सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए
समान रूप से उपयोगी

डॉ. मनीष रंजन (IAS)

प्रभात एग्जाम
www.prabhatexam.com

* इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किए गए हैं। यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक अथवा मुद्रक उस सामग्री से संबंधित किसी व्यक्ति-विशेष अथवा संस्था को पहुँची क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।
* प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस पुस्तक की विषय-सामग्री को किसी भी रूप में फोटोस्टेट, इलेक्ट्रोस्टेट, टंकण, सुधार प्रक्रिया इत्यादि तरीकों से पुनः प्रयोग कर उसका संग्रहण, प्रसारण एवं वितरण पूर्णतः वर्जित है।
* इस पुस्तक में मानचित्रों एवं चित्रों का प्रयोग पाठकों की सुविधा के लिए किया गया है। प्रदत्त मानचित्र पैमाने पर आधारित नहीं हैं।
* सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।

प्रकाशक

प्रभात एग्जाम

प्रभात प्रकाशन प्रा. लि. का उपक्रम

4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

फोन : 23289555 • 23289666 • 23289777 • हेल्पलाइन/ 7827007777

ई-मेल : prabhatbooks@gmail.com ❖ वेब ठिकाना : www.prabhatexam.com

सर्वाधिकार

सुरक्षित

अ.मा.पु.स. 978-93-90315-29-1

★

NCERT SAR SANKALAN (KAKSHA VI-XII SAHIT)

by Dr. Manish Rannjan (IAS)

ISBN 978-93-90315-29-1

विषय–सूची

भाग–I : इतिहास ---------- 1–70

1. प्राचीन भारत 3–26

- भारतीय इतिहास के स्त्रोत 3
- प्रागैतिहासिक काल 5
- हड़प्पा संस्कृति 6
- धार्मिक आंदोलन 9
- विदेशी आक्रमण 14
- मौर्य साम्राज्य 14
- मौर्योत्तर काल 17
- गुप्त काल 20
- गुप्तोत्तर काल 22
- उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश 23
- दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश 24

2. मध्यकालीन भारत 27–44

- अरबों द्वारा सिंध की विजय 27
- दिल्ली सल्तनत 27
- विजयनगर साम्राज्य 32
- बहमनी साम्राज्य 33
- प्रान्तीय स्वतन्त्र राजवंश 34
- धार्मिक आन्दोलन 35
- मुगल साम्राज्य 37
- मराठा शक्ति का अभ्युदय 43

3. आधुनिक भारत 45–55

- उत्तरकालीन मुगल साम्राज्य 45
- भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन व प्रसार 45
- भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव 46
- बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार 47
- आंग्ल–मैसूर संघर्ष 47
- आंग्ल–सिक्ख संघर्ष 48
- प्रमुख किसान विद्रोह 49
- 1857 ई. की महान क्रांति 50
- गवर्नर जनरल एवं वायसराय 51
- भारतीय शिक्षा–उदय और विकास 55

4. स्वतंत्रता आंदोलन 56–64

- उदारवादी युग 56
- उग्रवादी युग 56
- गाँधी युग 57

5. विश्व इतिहास 65–66

6. कला एवं संस्कृति 67–70

- भारतीय संगीत 67
- शास्त्रीय नृत्य 67
- भारतीय चित्रकला 68
- भारतीय मूर्तिकला 69

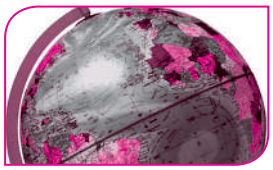

भाग–II : विश्व एवं भारत का भूगोल ---------- 1–68

1. विश्व का भूगोल 3–34

- ब्रह्माण्ड 3
- सौरमण्डल 4
- पृथ्वी की आकृति तथा आंतरिक संरचना 7
- पृथ्वी की गतियाँ 7
- अक्षांश एवं देशान्तर 8
- चट्टान 9
- पर्वत 10
- पठार 12
- मैदान 12
- झील 13
- भूकम्प 14
- ज्वालामुखी 15
- वायुमण्डल 17
- सूर्यातप 18
- वायुदाब तथा पवन 18
- बादल और वर्षण 20
- चक्रवात एवं प्रतिचक्रवात 21
- जलमण्डल 21
- महासागरीय लवणता 23
- महासागरीय धाराएं 23
- विश्व के महाद्वीप 25
- मृदा 28
- प्राकृतिक वनस्पति 29
- विश्व की प्रमुख फसलें 30
- विश्व (विविध) 31

2. भारत का भूगोल 35–54

- भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ 36
- भू-आकृति 37
- अपवाह-तन्त्र 41
- भारत की जलवायु 44
- मिट्टियाँ 44

- ❖ सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनाएँ 45
- ❖ कृषि 48
- ❖ भारत की खनिज सम्पदा 49
- ❖ उद्योग 51
- ❖ परिवहन 53

3. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी 55–68

- ❖ पारिस्थितिकी तंत्र 55
- ❖ जैवमंडल 56
- ❖ जैव–विविधता 56
- ❖ पर्यावरणीय प्रदूषण 57
- ❖ ग्रीन हाउस प्रभाव 58
- ❖ प्राकृतिक वनस्पति 60
- ❖ भारत में वन स्थिति रिपोर्ट–2021 61
- ❖ वन्य जीव 63
- ❖ भारत के 7 प्राकृतिक विश्व विरासत स्थल 64

भाग–III : भारतीय राजव्यवस्था ---- 1–56

1. भारतीय संविधान 3–14

- ❖ संवैधानिक विकास : संक्षिप्त रूपरेखा 3
- ❖ भारतीय संविधान का निर्माण 4
- ❖ भारतीय संविधान के प्रमुख स्रोत 6
- ❖ संविधान के लक्षण 6
- ❖ भारतीय संविधान की उद्देशिका 6
- ❖ भारतीय नागरिकता 8
- ❖ मौलिक अधिकार 11
- ❖ मौलिक कर्तव्य 13
- ❖ राज्य के नीति–निदेशक तत्व 14

2. संघीय कार्यपालिका 15–31

- ❖ कार्यपालिका 15
- ❖ राष्ट्रपति 15
- ❖ उप–राष्ट्रपति 18
- ❖ प्रधानमन्त्री 19
- ❖ उप–प्रधानमन्त्री 20
- ❖ मन्त्रिपरिषद् 21
- ❖ मन्त्रिमण्डल 21
- ❖ संघीय संसद 22

3. राज्य कार्यपालिका 32–34

- ❖ राज्यपाल 32
- ❖ मुख्यमन्त्री 33
- ❖ विधान परिषद् 33
- ❖ विधानसभा 34

4. न्यायालय 35–37

- ❖ सर्वोच्च न्यायालय 35
- ❖ उच्च न्यायालय 36

5. संस्थाएँ 38–41
- ❖ भारत की संवैधानिक संस्थाएँ 38
- ❖ संविधानेत्तर अधिकरण 40

6. केन्द्र–राज्य संबंध : संवैधानिक प्रावधान 42
- ❖ संघ सूची 42
- ❖ राज्य सूची 42
- ❖ समवर्ती सूची 42

7. पंचायती राज एवं ई–गवर्नेंस 43–45
- ❖ पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा 43
- ❖ पंचायतों का गठन और संरचना 44

8. राजभाषा एवं आपात उपबन्ध 46
- ❖ राजभाषा 46
- ❖ आपात उपबन्ध 46

9. संविधान संशोधन 47–49
- ❖ संशोधन की प्रक्रिया 47
- ❖ संविधान के प्रमुख संशोधन 48

10. राष्ट्रीय प्रतीक 50

11. राज्यों का पुनर्गठन 51–54
- ❖ पुनर्गठन का इतिहास 51
- ❖ राज्य पुनर्गठन से सम्बन्धित आयोग एवं समितियाँ 52
- ❖ जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन विधेयक, 2019 53
- ❖ क्षेत्रीय परिषदें 54

12. विविध 55–56
- ❖ वरीयता क्रम 55
- ❖ आयोग एवं मुख्यालय 56

भाग–IV : भारतीय अर्थव्यवस्था ---------- 1–46

1. प्रारंभिक अर्थशास्त्र 3–5
- ❖ अर्थव्यवस्था की क्रियाएँ 3
- ❖ अर्थशास्त्र की शाखाएँ 4
- ❖ अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण 4
- ❖ अर्थव्यवस्था के क्षेत्र 5

2. विकास 6–7
- ❖ आर्थिक विकास 6
- ❖ आर्थिक संवृद्धि 6
- ❖ आर्थिक विकास के आधुनिक संकेतक 7
- ❖ मानव विकास 7

3. आय 8–11
- ❖ राष्ट्रीय आय 8
- ❖ राष्ट्रीय आय को मापने की विधियाँ 8
- ❖ राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित विभिन्न संकल्पनाएँ 9
- ❖ राष्ट्रीय आय की गणना 10

4. आर्थिक नियोजन 12–13
- ❖ पंचवर्षीय योजनाएँ 12

5. निर्धनता एवं बेरोजगारी 14–15
- ❖ निर्धनता 14
- ❖ बेरोजगारी 15

6. योजनाएँ 16–21

7. उद्योग एवं व्यापार 22–27
- ❖ उद्योग 22
- ❖ व्यापार 25
- ❖ विदेशी निवेश 27

8. मुद्रा एवं मुद्रास्फीति 28–32
- ❖ मुद्रा 28
- ❖ मुद्रास्फीति 29
- ❖ मुद्रा विस्फीति 31

9. बैंकिंग एवं पूँजी बाजार 33–37
- ❖ बैंकिंग 33
- ❖ पूँजी बाजार 35

10. कर प्रणाली एवं बजट 38–41
- ❖ कर 38
- ❖ वस्तु एवं सेवा कर (GST) 39
- ❖ बजट 40

11. जनगणना–2011 42–46
- ❖ जनगणना 42

भाग–V : सामान्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ---------- 1–74

1. भौतिक विज्ञान 3–23
- ❖ मापन 3
- ❖ यांत्रिकी 4
- ❖ प्रकाश 13
- ❖ ध्वनि एवं तरंगें 16
- ❖ विद्युत 19
- ❖ चुम्बकत्व 21

2. रसायन विज्ञान 24–41
- ❖ द्रव्य का वर्गीकरण 24
- ❖ परमाणु 26
- ❖ रेडियो सक्रियता 26
- ❖ रासायनिक बन्धन 27
- ❖ रासायनिक अभिक्रियाएँ 27
- ❖ उत्प्रेरक 29
- ❖ अम्ल, क्षार तथा लवण 29
- ❖ तत्वों का आवर्ती वर्गीकरण 30

- अधातु 32
- धातुएँ 34
- कार्बन तथा उसके यौगिक 36
- मानव सेवा में रसायन 38
- ईंधन 40

3. जीव विज्ञान 42–62

- जीवन की उत्पत्ति 42
- जैव विकास 42
- जन्तु जगत 44
- आनुवांशिकी 46
- शरीर रचना एवं क्रिया 47
- मानव आहार 57
- मानव रोग 59

4. वनस्पति विज्ञान 63–65

5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 66–74

- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी 66
- रक्षा प्रौद्योगिकी 68
- कंप्यूटर 71

भाग–VI : बेसिक सामान्य ज्ञान ---------- 1–50

1. सामान्य ज्ञान (विश्व) 3–15

- अंतर्राष्ट्रीय संगठन 3
- प्रसिद्ध व्यक्ति 7
- प्रसिद्ध स्थान 9
- राजनीतिक तथ्य 13

2. सामान्य ज्ञान (भारत) 16–20

- भारत के प्रसिद्ध व्यक्ति 16

3. पुरस्कार एवं सम्मान 21–25

- अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 21
- भारतीय अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 22
- राष्ट्रीय पुरस्कार 23
- वीरता पुरस्कार 24
- साहित्य व सांस्कृतिक पुरस्कार 24
- फिल्म पुरस्कार 25

4. खेल एवं खिलाड़ी 26–30

- प्रमुख खेल और उनसे जुड़ी शब्दावली 26

5. पुस्तकें एवं लेखक 31–32

6. शब्द–संक्षेप 33–35

7. भारत के राज्य एवं केन्द्र–शासित प्रदेश 36–50

- राज्य 36
- केन्द्र-शासित प्रदेश (UTs) 47

भाग–I

इतिहास

1

प्राचीन भारत

भारतीय इतिहास के स्त्रोत

साहित्यिक साक्ष्य

- साहित्यिक साक्ष्य के अंतर्गत साहित्यिक ग्रंथों से प्राप्त सामग्रियों का अध्ययन किया जाता है। यह दो प्रकार के हैं–धार्मिक साहित्य एवं लौकिक साहित्य।
- पुरालेख शास्त्र शिलालेखों का अध्ययन करता है। ऐतिहासिक लेखों का संरक्षण विज्ञान की म्यूजियोलॉजी शाखा के अंतर्गत आता है।

धार्मिक साहित्य

- धार्मिक साहित्य के अंतर्गत ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेत्तर ग्रंथों की चर्चा की जा सकती है।
- ब्राह्मण ग्रंथों के अंतर्गत वेद, बाह्मण ग्रंथ, उपनिषद्, आरण्यक, वेदांग, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृति ग्रंथ आते हैं।
- ब्राह्मणेत्तर साहित्य के अंतर्गत बौद्ध तथा जैन साहित्य से सम्बन्धित रचनाओं का उल्लेख किया जाता है।
- **वेद:** ये भारत के सर्वप्राचीन धर्म ग्रंथ हैं जिनके संकलनकर्ता महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास को माना जाता है।
- वेदों की संख्या चार है–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। इन चारों वेदों को संहिता कहा जाता है।
- **ऋग्वेद:** चारों वेदों में सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद में **10 मण्डल, 8 अष्टक, 10,600 मंत्र** एवं **1028 सूक्त** हैं।
- ऋग्वेद का रचना काल सामान्यत: **1500 ई.पू.** से **1000 ई.पू.** के बीच माना जाता है।
- ऋग्वेद का दूसरा एवं सातवाँ मण्डल सर्वाधिक प्राचीन तथा पहला एवं दसवाँ मण्डल सबसे बाद का है।
- ऋग्वेद के नौवें मण्डल को 'सोम मण्डल भी' कहा जाता है।
- ऋग्वेद की मान्य 5 शाखाएँ हैं–**शाकलायन, आश्वलायन, माण्डूकायन, शांखायन** एवं **वाष्कलायन**।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुषसूक्त में सर्वप्रथम वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।
- प्रसिद्ध **गायत्री मंत्र (सावित्री)** का उल्लेख **ऋग्वेद** में मिलता है।
- **सामवेद**- को भारतीय संगीत का मूल अथवा जनक कहा जाता है। यह मुख्यत: यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। सामवेद में कुल 1875 ऋचाएँ हैं। इनमें मात्र 75 ही नई हैं, शेष ऋग्वेद से ली गई हैं।
- इस वेद की तीन मुख्य शाखाएँ हैं–जैमिनीय, राणायनीय तथा कौथुमीय।
- **यजुर्वेद**- में यज्ञ के नियमों एवं विधि-विधानों का संकलन मिलता है। यह एकमात्र ऐसा वेद है जो पद्य एवं गद्य दोनों ही रूपों में लिखा गया है।
- इस वेद के दो भाग हैं–**कृष्ण यजुर्वेद** और **शुक्ल यजुर्वेद**।
- कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ हैं–**तैत्तिरीय, कठ, कपिष्ठल, मैत्रायणी**।
- यजुर्वेद धार्मिक अनुष्ठानों से संबंध रखता है।
- शुक्ल यजुर्वेद की प्रधान शाखाएँ **माध्यन्दिन संहिता** तथा **काण्व संहिता** हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद की संहिताओं के रचयिता वाजसनेयी के पुत्र याज्ञवल्क्य हैं, इसलिए इसे वाजसनेयी संहिता भी कहा जाता है। इसमें केवल मंत्रों का समावेश है।
- **अथर्ववेद** में सामान्य मनुष्यों के विचारों तथा अंधविश्वासों का विवरण मिलता है, इसमें कुल **20 मण्डल**, **730 ऋचाएँ** तथा **5987 मंत्र** हैं।
- अथर्ववेद की दो शाखाएँ-शौणिक और पिप्पलाद है।
- **उपनिषद्:** इसका शाब्दिक अर्थ है समीप बैठना। इसमें आत्मा-परमात्मा एवं संसार के सन्दर्भ में प्रचलित दार्शनिक विचारों का संग्रह है।
- उपनिषद् वेदों का अन्तिम भाग है। इसे वेदान्त भी कहा जाता है।
- उपनिषदों की कुल संख्या 108 है।
- प्रमुख उपनिषद हैं–ईशावास्य, कठ, केन, मुण्डक, माण्डूक्य, प्रश्न, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, श्वेताश्वतर, कौशितकी एवं मैत्रायणी।
- प्रसिद्ध राष्ट्रीय वाक्य 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।
- **आरण्यक:** यह ब्राह्मण ग्रंथों का अन्तिम भाग है। इसमें दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन है। इनकी रचना वनों में पढ़ाए जाने के निमित्त की गई।
- प्रमुख आरण्यक हैं–ऐतरेय, शांखायन, तैत्तिरीय, वृहदारण्यक, जैमिनी, तवलकार।
- **वेदांग:** वेदों को भली-भाँति समझने के लिए छ: वेदांगों की रचना की गई है। ये वेदों के शुद्ध उच्चारण तथा यज्ञादि करने में सहायक थे।
- **पुराण:** पुराणों की संख्या 18 है।
- **रामायण:** यह आदि काव्य है। इसकी रचना दूसरी शताब्दी के आस-पास संस्कृत भाषा में वाल्मीकि द्वारा की गई थी। प्रारम्भ में इसमें **6000 श्लोक** थे जो कालांतर में **24,000** हो गए। इसे चतुर्विंशति सहस्त्री संहिता भी कहा जाता है।
- **महाभारत:** इस महाकाव्य की रचना चौथी शताब्दी के आस-पास महर्षि व्यास द्वारा की गई थी। प्रारंभ में इसमें **8,800 श्लोक** थे जिसे जयसंहिता कहा जाता था, तत्पश्चात् इसमें श्लोकों की **संख्या 24,000** हो गई और इसे भारत कहा जाने लगा। कालांतर में इसमें श्लोकों की संख्या एक लाख हो जाने पर महाभारत या शतसहस्री संहिता कहा जाने लगा। महाभारत का प्रारंभिक उल्लेख **आश्वलायन गृहसूत्र** में मिलता है।
- **सूत्र:** इस साहित्य की रचना ई. पूर्व छठी शताब्दी के आस-पास की गई थी। सूत्र ग्रंथों को **कल्प** भी कहा जाता है।
- **कल्प सूत्र:** ऐसे सूत्र जिनमें नियमों एवं विधियों का प्रतिपादन किया जाता है, **कल्पसूत्र** कहलाते हैं।

ई.पू. 600 से 300 ई. के मध्य रचित साहित्य

(क) श्रौत सूत्र: वेदों में वर्णित यज्ञ भागों का क्रमबद्ध विवरण तथा उस काल की परम्पराओं तथा धार्मिक रूढ़ियों का ज्ञान ऋग्वेद के दो श्रौत सूत्र-**आश्वलायन** एवं **शांखायन; यजुर्वेद के कात्यायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, बौधायन, भारद्वाज** तथा **वैखानस;** सामवेद के लाटयायन द्राह्यायण व आर्षेय तथा अथर्ववेद के वैतान से मिलता है।

(ख) गृह्य सूत्र: गृहस्थाश्रम से संबद्ध धार्मिक अनुष्ठान (कर्त्तव्य) से संबद्ध प्रमुख गृह सूत्र शांखायन आश्वलायन, बोधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, भारद्वाज, परासर, गोभिल, खादिर एवं कौशिक।

(ग) धर्म सूत्र: धर्मसूत्रो में, वर्णधर्म, राजा के कर्तव्य, प्रायश्चित विधान, न्यायालयों की स्थापना, कराधान, वियोग नियम तथा गृहस्थ कर्तव्यों का विवरण आदि मौजूद है। प्रमुख धर्मसूत्र-वशिष्ठ हारीत, आपस्तम्ब, बौधायन, गौतम आदि है। धर्मसूत्रों से ही कालान्तर में स्मृति ग्रंथों का विकास हुआ।

(घ) शुल्व सूत्र: 'शुल्व' का तात्पर्य है–**नापने की डोरी**। इसमें यज्ञ की वेदियों को नापने, स्थान चयन एवं निर्माणादि का वर्णन है। ये आर्यो के ज्यामिति ज्ञान का परिचायक है।

- **षड्दर्शन:** उपनिषदों के दर्शन को भारतीयों ने छः भागों में विभाजित किया है जिसे षड्दर्शन कहा जाता है। इसमें **आत्मा**, **परमात्मा**, **जीवन** और **मृत्यु** से सम्बन्धित विचारों का वर्णन है। जो हैं- मीमांसा, वेदांत, न्याय, योग, सांख्य और वैशेषिक
- **स्मृतियाँ:** वेदांग और सूत्रों के बाद स्मृतियों का उदय हुआ। इन्हें धर्म शास्त्र भी कहा जाता है।
- मनुस्मृति के भाष्यकार क्रमशः है–**मेघातिथि**, **भारुचि**, **कुल्लूक भट्ट** तथा **गोविंद राज**।
- याज्ञवल्क्य स्मृति के भाष्यकार क्रमशः–अपरार्क, विश्वरूप एवं विज्ञानेश्वर हैं।

लौकिक साहित्य

- लौकिक साहित्य के अंतर्गत ऐतिहासिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रंथों तथा जीवनियों का उल्लेख किया जाता है जिनसे भारतीय इतिहास को जानने में काफी मदद मिलती है।
- **कौटिल्य (चाणक्य)** रचित अर्थशास्त्र से मौर्यकालीन इतिहास एवं शासन व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।
- ऐतिहासिक रचनाओं में सर्वाधिक महत्व कश्मीरी कवि कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी का है।
- अर्द्ध-ऐतिहासिक रचनाओं में पाणिनी की **अष्टाध्यायी**, **कात्यायन** की **वार्तिका**, **गार्गी संहिता**, पतंजलि का **महाभाष्य**, विशाखदत्त का **मुद्राराक्षस** तथा कालिदास कृत **मालविकाग्निमित्रम्** आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- गार्गी संहिता यद्यपि एक ज्योतिष ग्रंथ है तथापि इसमें भारत पर होने वाले यवन आक्रमण का उल्लेख मिलता है।
- ऐतिहासिक जीवनियों में अश्वघोष का **बुद्धचरित**, बाणभट्ट का **हर्षचरित**, वाक्पति राज का **गौड़वाहो**, विल्हण का **विक्रमांकदेवचरित**, पद्मगुप्त का **नवसहसांकचरित**, जयानक कृत **पृथ्वीराज विजय** इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

विदेशी यात्रियों के विवरण

- विदेशी यात्रियों के विवरण साहित्यिक साक्ष्य के अंतर्गत आते हैं। इनके विवरण से तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक अवस्था का पता चलता है।
- विदेशियों के विवरण को तीन भागों में बाँटा गया है–**(1)** यूनान और रोम के लेखकों का विवरण, **(2)** चीनी यात्रियों के वृत्तांत तथा **(3)** अरब यात्रियों के वृत्तांत।

यूनान एवं रोम के लेखकों का विवरण

- **हेरोडोट्स:** इन्हें इतिहास का पिता कहा जाता है। इन्होंने अपनी पुस्तक **हिस्टोरिका** में **पाँचवी शताब्दी** ईसा पूर्व के ग्रीस-फारस संबंधों का वर्णन किया है।
- **मेगास्थनीज:** यह **सेल्यूकस निकेटर** का राजदूत था जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। इन्होंने **'इण्डिका'** नामक अपने ग्रंथ में मौर्ययुगीन समाज एवं संस्कृति के विषय में लिखा है।
- **डायमेकस:** यह सीरियाई नरेश **एन्टियोकस प्रथम** का राजदूत था जो **बिन्दुसार** के दरबार में आया था।
- **डायोनिसियस:** यह मिस्र नरेश टॉलमी द्वितीय फिलाडेल्फस का राजदूत था जो अशोक के दरबार में आया था।
- **टॉलमी:** इन्होंने दूसरी शताब्दी ई. के आस-पास **(150 ई.)** **'भूगोल'** नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- **प्लिनी:** इन्होंने **'नेचुरल हिस्टोरिका'** नामक ग्रंथ की रचना प्रथम शताब्दी ईस्वी में की थी। इसमें भारतीय पशुओं, पेड़-पौधों, खनिज पदार्थों इत्यादि का विवरण दिया गया है।

चीनी यात्रियों के वृत्तांत

- चीनी यात्री फाह्यान, सुंगयुन, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग के विवरण भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में विशेष उपयोगी रहे हैं।
- **फाह्यान:** यह गुप्त नरेश **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375–415 ई.)** के समय भारत आया था। इन्होंने अपने विवरण में मध्यदेश के समाज एवं संस्कृति का वर्णन किया है जिसमें इन्होंने मध्य देश की जनता को 'सुखी एवं समृद्ध' बताया है। फाह्यान भारत में 12 वर्षों तक रहे।
- **सुंगयुन:** यह **518 ई.** में भारत आया था। उन्होंने अपने तीन वर्षों की यात्रा में बौद्ध ग्रंथों की प्रतियाँ एकत्रित की।
- **ह्वेनसांग:** इसे युवा **नव्वांग** के नाम से भी जाना जाता है। यह **हर्षवर्द्धन** के समय **629 ई.** के आस-पास भारत आया था। यह 16 वर्षों तक भारत में रहा।
- ह्वेनसांग का यात्रा वृतांत 'सि-यू-की' के नाम से जाना जाता है इसमें 138 देशों का विवरण मिलता है।
- ह्वेनसांग की जीवनी ह्वीली ने लिखी थी। यह ह्वेनसांग का मित्र था।
- **इत्सिंग:** यह **सातवीं शताब्दी** के अंत में भारत आया था। इसने अपने विवरण में **नालन्दा विश्वविद्यालय**, **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** के अतिरिक्त अपने समय की भारतीय दशाओं का वर्णन किया है।

अरब यात्रियों के वृत्तांत

- अरबी लेखकों में अलबरूनी, अल-बिलादुरी, सुलेमान, अल-मसूदी, हसन निजामी, फरिश्ता, निजामुद्दीन इत्यादि मुसलमान लेखक की कृतियों से भारतीय इतिहास विषयक महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- **अलबरूनी:** इसका पूरा नाम अबूरेहान-मुहम्मद-इब्द-अहमद-अलबरूनी था। इसका जन्म 973 ई. में ख्वारिज्म (खींवा) में हुआ था।
- यह महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। यह अरबी, फारसी एवं संस्कृत भाषाओं का अच्छा ज्ञाता था।
- **इब्नखुर्दाबः** इसने नवीं शती के ग्रंथ **'किलबुल-मसालिक वल-ममालिक'** में भारतीय समाज तथा व्यापारिक मार्गों का विवरण दिया है।
- **अलमसूदी:** इसने अपने ग्रंथ **'मुरूरज जहब'** में तत्कालीन भारतीय समाज का सजीव चित्रण किया है।
- **सुलेमान:** इसके विवरण से प्रतिहार एवं पाल राजाओं के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।
- **मीर मुहम्मद मासूम** के तारीख-ए-हिन्द से सिन्ध देश के इतिहास तथा मुहम्मद-बिन-कासिम की सफलताओं की जानकारी मिलती है।

पुरातत्व संबंधी साक्ष्य

पुरातत्व के अंतर्गत तीन प्रकार के साक्ष्य आते हैं–**अभिलेख**, **मुद्रा** एवं **स्मारक**।

अभिलेख

- अभिलेख **पाषाण शिलाओं**, **स्तंभों**, **दीवारों**, **मुद्राओं** एवं **ताम्रपत्रों** पर उत्कीर्ण किए जाते थे।
- अभिलेखों के अध्ययन को पुरालेख शास्त्र कहते हैं।
- सबसे प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोगजकोई से प्राप्त अभिलेख है। जिसमें हिती नरेश सुब्बिलिमा तथा मितन्नी नरेश मतिऊजा के बीच संधि का उल्लेख है।
- **बोगजकोई अभिलेख** (एशिया माइनर) लगभग **1400 ई.पू.** का अभिलेख है जिसमें वैदिक देवता इन्द्र, मित्र, वरुण एवं नासत्य के नाम मिलते हैं।

महत्वपूर्ण अभिलेख

क्र.सं.	अभिलेख	शासक एवं अभिलेख की विशेषताएँ
1.	हाथीगुम्फा अभिलेख (तिथि रहित अभिलेख)	कलिंग राज खारवेल
2.	जूनागढ़ (गिरनार अभिलेख)	रुद्रदामन (सुदर्शन झील के बारे में जानकारी)
3.	नासिक अभिलेख	गौतमी बलश्री (सातवाहनों की उपलब्धियाँ)
4.	प्रयाग स्तम्भ अभिलेख	समुद्रगुप्त (इसकी दिग्विजयों की जानकारी)

5.	ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय
6.	मन्दसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोवर्मन
7.	ग्वालियर अभिलेख	प्रतिहार नरेश भोज
8.	भीतरी एवं जूनागढ़ अभिलेख	स्कन्दगुप्त (हूणों पर विजय का विवरण)
9.	देवपाड़ा अभिलेख	बंगाल शासक विजयसेन
10.	बांसखेड़ा, और मधुबन अभिलेख	हर्षवर्द्धन की उपलब्धियों पर प्रकाश
11.	बालाघाट कार्ले अभिलेख	सातवाहनों की उपलब्धियाँ
12.	अयोध्या अभिलेख	शुंगों की उपलब्धियाँ
13.	भरहुत अभिलेख	सुंगनरेण शब्द खुदे होने से शुंगों द्वारा निर्मित
14.	एरण अभिलेख	भानुगुप्त

- भागवत धर्म विकसित होने का प्रमाण यवन राजदूत 'हेलियोडोरस' के बेसनगर (विदिशा) गरुड़ स्तम्भ लेख से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम **'भारतवर्ष'** शब्द का उल्लेख **कलिंग नरेश खारवेल** के हाथीगुम्फा अभिलेख से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम दुर्भिक्ष की जानकारी देने वाला अभिलेख **सोहगौरा अभिलेख** है।
- सर्वप्रथम भारत पर होने वाले हूण आक्रमण की जानकारी स्कंदगुप्त के भीतरी स्तंभ लेख से प्राप्त होती है।
- **सती प्रथा** का पहला साक्ष्य 510 ई. के **एरण अभिलेख** (सेनापति भानुगुप्त) से मिलता है।
- **रेशम बुनकर** की श्रेणियों की जानकारी **मंदसौर अभिलेख** से प्राप्त होती है।

मुद्रा

- यद्यपि भारत में सिक्कों की प्राप्ति आठवीं शताब्दी ई.पू. से ही मिलती है।
- प्राचीनतम सिक्कों को आहत सिक्के (Punch Marked Coins) कहा जाता है, साहित्यिक ग्रंथों में इन्हें **कार्षापण**, **पुराण**, **धरण**, **शतमान** आदि नामों से भी जाना जाता है।
- आहत सिक्के अधिकांशतः चांदी के टुकड़े हैं जिन पर विविध आकृतियाँ अंकित की गई हैं।
- सिक्कों पर लेख लिखवाने का कार्य सर्वप्रथम यवन शासकों ने किया।
- प्राचीन भारत के गणराज्यों का अस्तित्व मुद्राओं से ही प्रमाणित होता है।
- कनिष्क के सिक्कों से हमें उसके बौद्ध धर्म का अनुयायी होने का पता चलता है।

प्रागैतिहासिक काल

- जिस काल के इतिहास का लिखित विवरण नहीं मिलता, वह काल प्रागैतिहासिक काल कहलाता है, जैसे–पाषाण काल।
- जिस काल के लिखित विवरण तो मिलते हैं लेकिन उसका अर्थ स्पष्ट नहीं हो सका है, वह काल आद्य ऐतिहासिक काल कहलाता है, जैसे–सिन्धु सभ्यता तथा वैदिक सभ्यता।
- जिस काल से लिखित साक्ष्य का स्पष्ट विवरण प्राप्त होता है वह काल ऐतिहासिक काल कहलाता है, जैसे–महाजनपदों के बाद का काल (छठी सदी ई.पू. से)।
- प्रागैतिहासिक काल को सामान्यतः तीन भागों में बाँटा गया है–**पुरापाषाण काल**, **मध्यपाषाण काल** तथा **नव या उत्तर पाषाण काल**।

पुरापाषाण काल (5,00,000–10,000 ई.पू.)

- सर्वप्रथम पाषाण कालीन सभ्यता तथा संस्कृति का अन्वेषण रार्बट ब्रूस फुट महोदय ने 1863 ई. में किया।
- पुरापाषाण काल को तीन भागों में बाँटा जाता है–**(1)** निम्न पुरापाषाण काल, **(2)** मध्य पुरापाषाण काल तथा **(3)** उच्च पाषाण काल।
- निम्न पुरापाषाण युग के स्थल वर्तमान पाकिस्तान की सोहन घाटी एवं महाराष्ट्र में पाए गए हैं।
- इस काल के लक्षण थे–कुल्हाड़ी या हस्तकुठार (हैंड एक्स), विदारिणी (क्लीवर) और खंडक (गंडासा) का प्रयोग।
- भारत में सबसे पुराना **हस्तकुठार सोहन घाटी** से प्राप्त हुआ है।
- **लोहंदा नाला (बेलन घाटी, उत्तर प्रदेश)** से पशु की हड्डी से बनी मूर्ति प्राप्त हुई है।
- **हथनौरा (मध्य प्रदेश)** से हाथी का सबसे पुराना जीवाश्म मिला है।
- मध्य पुरापाषाण युग के औजार मुख्यतः शल्क (Flake) से बने थे। अतः इस संस्कृति को फलक संस्कृति की संज्ञा दी गई है।
- खुरचनी, फलक, वेधनी, वेधक तथा तक्षणी इस संस्कृति के प्रधान उपकरण थे।
- पुरापाषाण काल में आग का आविष्कार हुआ जबकि नवपाषाण काल में पहिए का आविष्कार हुआ।
- इस काल के **मानवों की गुफाएँ भीमबेटका** से मिली हैं जिनमें विभिन्न कालों की चित्रकारी देखने को मिलती है।
- उच्च पुरापाषाण कालीन चित्रों में भैंसे, हाथी, बाघ, गैंडे तथा सूअर के चित्र प्रमुख हैं।
- भीमबेटका गुफाओं की खोज **1958** में **बी.एस. वाकणकर** ने की थी।

पुरापाषाण युग

श्रेणी	क्षेत्र-जहाँ से औजार पाए गए
निम्न पुरापाषाण युग	सोहन घाटी, (पाकिस्तानी पंजाब) बेलन घाटी (जिला-मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश)
मध्य पुरापाषाण युग	सोहन घाटी, बेलन घाटी नर्मदा घाटी और तुंगभद्रा घाटी
उत्तर पुरापाषाण युग	बेलन घाटी, छोटानागपुर पठार, मध्य भारत, नागपुर, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश

मध्यपाषाण काल (10,000–4,000 ई.पू.)

- यह काल पुरापाषाण काल तथा नवपाषाण काल दोनों की सम्मिश्रित विशिष्टताओं का प्रदर्शन करता है।
- इस काल के लोग शिकार करके, मछली पकड़कर तथा खाद्य वस्तुएँ बटोरकर पेट भरते थे।
- मध्यपाषाण काल में पाषाण के लघु उपकरण बनाए जाते थे।
- भारत में सबसे पहला लघु **पाषाण उपकरण 1867 ई.** में विंध्य क्षेत्र में **सी. एल. कार्लाइल** द्वारा खोजा गया।
- प्रमुख मध्यपाषाण कालीन उपकरण हैं–**इकधर**, **फलक**, **वेधनी**, **अर्द्धचन्द्राकार**, **समलंब** इत्यादि।
- मध्यपाषाण काल में प्रक्षेपास्त्र तकनीक का विकास हुआ जिससे **तीर-कमान** का प्रचलन आरंभ हुआ।
- तापमान में बदलाव आने से जौ, गेहूँ, धान जैसी फसले उगने लगी।

मध्यपाषाण युग

स्थान	स्थान	समय
आदमगढ़	होशंगाबाद के समीप मध्य प्रदेश	7वीं सहस्राब्दी ई.पू.
भीमबेटका	भोपाल के समीप मध्य प्रदेश	7वीं से 5वीं सहस्राब्दी ई.पू.
बोधोर	सीधी के समीप मध्य प्रदेश	8वीं से 5वीं सहस्राब्दी ई.पू.
बागोर	भीलवाड़ा के समीप राजस्थान	6वीं सहस्राब्दी ई.पू.
महागढ़	मेजा के समीप उत्तर प्रदेश	10वीं सहस्राब्दी ई.पू.
सराय नाहरराय	प्रतापगढ़ के समीप उत्तर प्रदेश	10वीं सहस्राब्दी ई.पू.
पायसरा	मुंगेर के समीप बिहार	7वीं सहस्राब्दी ई.पू.

नवपाषाण काल (4,000–2,500 ई.पू.)

- इस काल की शुरुआत **4,000 ई.** पूर्व से होती है।
- नवपाषाणकालीन लोगों को बीज का ज्ञान हुआ और इससे वे फसल उपजाने लगे।

- स्थायी निवास की अवधारणा नवपाषाण काल में आई तथा मानव ने **'कुत्ते'** को सर्वप्रथम पालतू बनाया।
- इस काल के लोग पॉलिशदार पत्थर के औजारों और हथियारों का प्रयोग करते थे।
- नवपाषाण काल की प्रमुख विशेषताएँ थी–कृषि का आरंभ, गर्त-आवास (बुर्जहोम), मानव शव के साथ पशु (कुत्ता) दफनाना, बड़ी मात्रा में अस्थि के औजार, पोत-निर्माण, ऊन के साक्ष्य, स्थायी जीवन एवं समाज का निर्माण।

आद्य ऐतिहासिक काल

- आद्य ऐतिहासिक काल को दो भागों में बाँटा जाता है–**(1)** ताम्रपाषाण काल (3500 ई.पू.–1200 ई.पू.) और **(2)** लौह काल (1000 ई.पू.–600 ई.पू.)।
- **ताम्रपाषाण काल** मुख्यत: ग्रामीण संस्कृति थी। इसे कृषक संस्कृति, पशुचारिक संस्कृति एवं क्षेत्रीय संस्कृति भी कहा जाता है।
- ताम्रपाषाण कालीन लोग **तांबे और पाषाण (पत्थर)** का साथ-साथ प्रयोग करते थे। यह भारत में कई संस्कृतियों का आधार बना।
- दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान की संस्कृति को **अहार संस्कृति या अहाड़** कहा जाता है। अहार का प्राचीन नाम ताम्बवर्ती था।
- **नवदाटोली, एरण** और **नागदा मालवा संस्कृति** के मुख्य स्थल हैं। नवदाटोली का उत्खनन कार्य **प्रो. एच.डी. सांकलिया** ने करवाया।
- 'ताँबा' धातु का सर्वप्रथम प्रयोग हुआ तथा प्रथम औजार **'कुल्हाड़ी'** बनाया गया **(साक्ष्य स्थल-अतिरम्पकम)**।
- **लौह काल:** लौह काल का निर्धारण सामान्यत: 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. के बीच किया जाता है।
- उत्तर भारत में लौह काल के साथ-साथ **चित्रित धूसर मृद्भांड (पी.जी.डब्ल्यू.)** संस्कृति कायम हुई।
- दक्षिण भारत में लौह काल महापाषाण संस्कृति के समकालीन था।

हड़प्पा संस्कृति

- **रेडियो कार्बन C^{14}** के आधार पर सिन्धु सभ्यता की सर्वमान्य तिथि 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू. मानी गई है।
- व्हीलर ने हड़प्पा को सुमेरियन सभ्यता का उपनिवेश कहा है।
- **सर जॉन मार्शल** 'सिंधु सभ्यता' शब्द का प्रयोग करने वाले पहले पुरातत्वविद् थे।
- सिन्धु सभ्यता को **कांस्य (Bronze)** युग में रखा गया है।
- हड़प्पा सभ्यता से चार प्रजातियों के अस्तित्व प्राप्त हुए हैं इनमें सर्वाधिक संख्या भूमध्यसागरीय लोगों की थी। इसके अलावा प्रोटो ऑस्ट्रेलॉयड, मंगोलॉयड तथा अल्पाइन लोगों का भी निवास था। यहाँ नीग्रो प्रजाति के लोग नहीं रहते थे।

हड़प्पा सभ्यता की सीमाएं

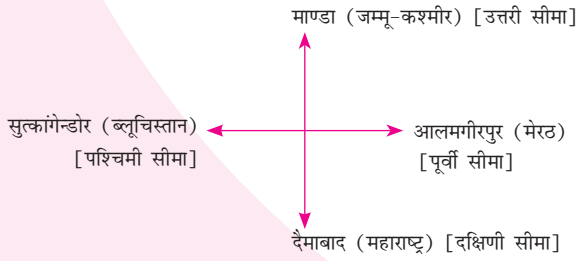

- सिन्धु सभ्यता की लिपि भावचित्रात्मक थी। यह लिपि **दाईं से बाईं** और **बाईं से दाईं** ओर लिखी जाती थी।
- सिन्धु सभ्यता के लोगों ने नगरों तथा घरों के विन्यास के लिए ग्रिड पद्धति अपनाई।
- घरों के दरवाजे और खिड़कियाँ सड़क की ओर न खुलकर पीछे की ओर खुलते थे। केवल **लोथल** नगर के घरों के दरवाजें **मुख्य सड़क** की ओर खुलते थे।
- सिन्धु सभ्यता की मुख्य फसलें–**गेहूँ और जौ** थी।
- माप की इकाई संभवत: 16 के अनुपात में थी।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त अन्नागार सैंधव सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त वृहत् स्नानागार एक प्रमुख स्मारक है, जिसके मध्य स्थित स्नानकुंड 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा एवं 2.43 मीटर गहरा है।
- सैंधववासी मिठास के लिए शहद का प्रयोग करते थे।
- हड़प्पा संस्कृति का शासन संभवत: वणिक वर्ग के हाथों में था।
- पिगट ने **हड़प्पा** एवं **मोहनजोदड़ो** को विस्तृत साम्राज्य की जुड़वां राजधानी कहा है।
- सिन्धु सभ्यता के लोग धरती को उर्वरता की देवी मानकर उसकी पूजा किया करते थे।
- **वृक्ष-पूजा** एवं **शिव-पूजा** के प्रचलन के साक्ष्य भी सिन्धु सभ्यता से मिलते हैं
- स्वास्तिक चिह्न संभवत: हड़प्पा सभ्यता की देन है। सिन्धु सभ्यता के नगरों में किसी भी मंदिर के अवशेष नहीं मिले हैं।
- सिन्धु घाटी के लोग **पशुपति की पूजा** करते थे।
- सिन्धु सभ्यता में मातृदेवी की उपासना सर्वाधिक प्रचलित थी।
- पशुओं में **कूबड़ वाला साँड**, इस सभ्यता के लोगों के लिए विशेष पूजनीय था।
- शवों को जलाने एवं गाड़ने की दोनों प्रथाएँ प्रचलित थी। हड़प्पा में शवों को दफनाने जबकि मोहनजोदड़ो में जलाने की प्रथा विद्यमान थी। लोथल एवं कालीबंगा में युग्म समाधियाँ मिली हैं।

सैंधव सभ्यता के प्रमुख स्थल

वर्ष	उत्खननकर्ता	प्रमुख स्थल	नदी	स्थिति
1921	दयाराम साहनी	हड़प्पा	रावी के बाएँ तट	पाकिस्तान (मांटगोमरी जिला)
1922	राखलदास बनर्जी	मोहनजोदड़ो	सिन्धु के बाएँ तट	पाकिस्तान (सिंध प्रांत) का लरकाना जिला
1931	गोपाल मजूमदार	चन्हूदड़ो	सिन्धु	सिंध प्रांत (पाकिस्तान)
1953	बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर	कालीबंगन	घग्घर	राजस्थान (हनुमान गढ़ जिला)
1953	फज़ल अहमद	कोटदीजी	सिन्धु के बाएँ तट	सिंध प्रांत (खैरपुर)
1953–54	रंगनाथ राव	रंगपुर	मादर	गुजरात (काठियावाड़)
1953–56	यज्ञदत्त शर्मा	रोपड़	सतलुज	पंजाब (रोपड़)
1955–63	रंगनाथ राव	लोथल	भोगवा	गुजरात (अहमदाबाद)
1958	यज्ञदत्त शर्मा	आलमगीरपुर	हिन्डन	उत्तर प्रदेश (मेरठ)
1927–62	आर. एल. स्टाइन, जॉर्ज डेल्स	सुत्कांगेडोर	दाश्क	पाकिस्तान (मकरान) में समुद्र तट के किनारे
1974	रवीन्द्र सिंह बिष्ट	बनावली	रंगोई	हरियाणा (हिसार)
1990–91	रवीन्द्र सिंह बिष्ट	धौलावीरा	मनहर व मानसर	गुजरात (कच्छ)
1963–79	जॉर्ज डेल्स	बालाकोट	बिंदार	अरब सागर
1975–76	जे.पी. जोशी	माण्डा	चिनाब	जम्मू (अखनूर)

- आग में पकी हुई मिट्टी को **टेराकोटा** कहा जाता है।
- हड़प्पा संस्कृति के सर्वाधिक स्थल 'गुजरात' (आजादी के बाद) में मिले हैं।
- सिन्धु घाटी के लोगों की एक महत्वपूर्ण रचना नृत्य करती हुई बालिका की मूर्ति है, जो कांसे से निर्मित है।
- मोहनजोदड़ो का अर्थ होता है–**'मुर्दों का टीला'**।
- सिन्धु सभ्यता की लिपि में **64 मूल चिह्न** तथा **250–400** तक अक्षर हैं।
- लिपि में सर्वाधिक प्रचलित चिह्न मछली का है।
- सैंधव सभ्यता के विनाश का संभवतः सबसे प्रभावी कारण बाढ़ था।
- हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की खुदाइयों से पता चलता है कि कई बार इन नगरों का पुनर्निर्माण किया गया था।

हड़प्पा संस्कृति की आयातित वस्तुएँ एवं आयातक क्षेत्र

क्र.सं.	आयातित वस्तुएं	आयातक क्षेत्र
1.	सोना	कर्नाटक (कोलार), फारस, अफगानिस्तान
2.	चाँदी	मद्रास, फारस, अफगानिस्तान
3.	तांबा	खेतड़ी (राजस्थान), ब्लूचिस्तान, अफगानिस्तान
4.	टिन	मध्य एशिया, ईरान, अफगानिस्तान
5.	सीसा	राजस्थान, दक्षिणी भारत, ईरान, अफगानिस्तान
6.	गोमेद	सौराष्ट्र (गुजरात)
7.	फिरोजा	फारस
8.	लाजवर्द	बदख्शां (अफगानिस्तान), ब्लूचिस्तान
9.	शिलाजीत	हिमालय
10.	जुबमणि	महाराष्ट्र
11.	स्टेटाइट	ईरान
12.	हरा अमेजन	नीलगिरी पहाड़ियाँ
13.	अलवास्ट	राजस्थान, ब्लूचिस्तान
14.	वैदूर्य	बदख्शां (अफगानिस्तान)
15.	स्फटिक	दक्कन का पठार, उड़ीसा, बिहार
16.	हरित मणि	दक्षिण भारत
17.	डापर बिटुमन	ब्लूचिस्तान
18.	शैलखड़ी	राजस्थान, गुजरात, ब्लूचिस्तान
19.	नीलरत्न	बदख्शां
20.	स्लेट	कांगड़ा

हड़प्पा संस्कृति का पतन एवं मत

क्र.सं.	मत	प्रस्तुतकर्ता विद्वान
1.	आर्यों द्वारा विनाश	व्हीलर व गार्डन
2.	भीषण बाढ़ द्वारा नष्ट	मार्शल, मैके व एस.आर. राव
3.	मोहनजोदड़ो में आगजनी द्वारा विनाश	डी.डी. कौशांबी
4.	वर्षा की कमी से कृषि व पशुपालन	ऑरेल स्टाइन
5.	भूकम्प द्वारा विनाश	डेल्स
6.	जलप्लावन एवं भूतात्विक परिवर्तनों द्वारा विनाश	दयाराम साहनी
7.	ओलावृष्टि एवं जलवायु परिवर्तन द्वारा विनाश	ऑरेल स्टाइन व अमलानंद घोष
8.	प्राकृतिक आपदाओं द्वारा विनाश	केनेडी
9.	महामारी द्वारा विनाश	कलकत्ता व कराची के शव परीक्षक
10.	प्रशासनिक शिथिलता के कारण पतन	सर जॉन मार्शल

वैदिक काल

वैदिक काल का विभाजन–**ऋग्वैदिक काल 1500–1000 ई.पू.** और उत्तर **वैदिक काल 1000–600 ई.पू.** में किया गया है। इसके संस्थापक आर्य थे।

ऋग्वैदिक काल

- ऋग्वैदिक लोगों द्वारा सर्वप्रथम **तांबे का प्रयोग किया** गया था, ऋग्वेद में **अयस नामक धातु** का उल्लेख है।
- मैक्समूलर, आर्यों को आदि देश, मध्य एशिया को मानते हैं।
- **मैक्समूलर** ने आर्यों का मूल निवास स्थान **मध्य एशिया** को माना है। आर्यों द्वारा निर्मित सभ्यता वैदिक सभ्यता कहलाई।
- सिन्धु सभ्यता के विपरीत आर्य सभ्यता एक ग्रामीण सभ्यता थी। उनकी भाषा संस्कृत थी।
- आर्य समाज **पितृप्रधान** था। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार (कुल) थी जिसका मुखिया **'कुलप'** कहलाता था।
- आर्यों ने प्रशासनिक इकाई को 5 भागों में बाँटा था–**कुल**, **ग्राम**, **विश**, **जन** तथा **राष्ट्र**।
- ग्राम का मुखिया **ग्रामिणी** एवं विश का प्रधान **विशपति** कहलाता था। जन के शासक को **राजन** कहा जाता था।
- राज्याधिकारियों में **पुरोहित** एवं **सेनानी** प्रमुख थे।
- **सूत**, **रथकार** तथा **कम्मादि** नामक अधिकारी **रत्निन** कहे जाते थे। इनकी संख्या राजा सहित करीब 12 हुआ करती थी।

वैदिक कालीन नदियाँ

क्र.सं.	प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
1.	सिंधु	इन्दुस या इन्डस
2.	सरस्वती	सरस्वती
3.	शुतुद्रि	सतलुज
4.	विपाशा	व्यास
5.	पुरुष्णी	रावी
6.	अस्किनी	चिनाब
7.	वितस्ता	झेलम
8.	दृषद्वंती	घग्घर
9.	गोमल	गोमती
10.	कुंभा	काबुल
11.	सुवास्तु	स्वात
12.	सदानीरा	गंडक

- **पुरप-दुर्गपति** एवं **स्पश-जनता** की गतिविधियों को देखने वाले गुप्तचर होते थे।
- **व्राजपति**-गोचर भूमि का अधिकारी होता था।
- **उग्र**-अपराधियों को पकड़ने का कार्य करता था।
- **सभा** एवं **समिति** राजा को सलाह देने वाली संस्था थी। सभा श्रेष्ठ एवं संभ्रात लोगों की संस्था थी।

वैदिक काल में प्रयोग किए जाने वाले शब्द

राजा	–	गोप्ता
अतिथि	–	गोहंता/गोहन
युद्ध	–	गविष्टि, गेसू, गम्य
गाय	–	अघन्या
लांगल	–	हल
व्राजपति	–	चारागाह प्रमुख
कुलप	–	परिवार का प्रधान
स्पश	–	गुप्तचर
खिल्य	–	चारागाह
बेकनाट	–	सूदखोर
अनाज	–	धान्य

- **ऋग्वैदिक काल** में महिलाएँ भी **सभा** एवं **विदथ** में भाग लेती थी।
- ऋग्वेद में जन शब्द का उल्लेख **275 बार**, **विश 170 बार**, **सभा 8 बार**, **समिति 9 बार** एवं **शूद्र** शब्द का उल्लेख **एक** बार आया है।
- **ऋग्वेद में 25 नदियों** का उल्लेख है, जिसमें **सरस्वती** सबसे महत्वपूर्ण तथा पवित्र नदी थी यद्यपि इसमें गंगा और यमुना का उल्लेख सिर्फ एक बार हुआ है।

आर्यों का मूल स्थान एवं मत

क्र.सं.	आर्यों का मूल स्थान	सिद्धांत प्रतिपादक
1.	मध्य एशिया	मैक्समूलर
2.	तिब्बत	दयानन्द सरस्वती
3.	पामीर का पठार	एडवर्ड मेयर
4.	रूसी तुर्किस्तान	हर्जफील्ड
5.	बैक्ट्रिया	जेसी रॉड
6.	स्टेस मैप्लन (किरगीज)	ब्रेडस्टीन
7.	जर्मनी (स्कैंडेनेविया)	पेंका एवं हर्ट
8.	डेन्यूब नदी के पास (हंगरी)	प्रो. गाइल्स
9.	दक्षिणी रूस	नेहरिंग, प्रो. चाइल्ड एवं प्रो. मीयर्स
10.	पश्चिमी बाल्टिक समुद्र तट	मच
11.	मध्य भारत (मध्य प्रदेश)	राजबली पांडे
12.	कश्मीर	एल.डी. कल्ला
13.	ब्रह्मर्षि देश	गंगानाथ झा
14.	सप्त सैंधव प्रदेश	डॉ. सम्पूर्णा नंद
15.	देविकानंद प्रदेश (मुल्तान)	डी.एस. त्रिवेदी
16.	उत्तरी ध्रुव (आर्कटिक)	बाल गंगाधर तिलक

- ऋग्वेद के 7वें मण्डल में **दाशराज्ञ युद्ध** का वर्णन किया गया है जो पुरुष्णी (रावी) नदी के तट पर **सुदास** एवं **दस** जनों के मध्य लड़ा गया, जिसमें **सुदास** की विजय हुई।
- युद्ध के लिए **गविष्टि शब्द** का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है–गायों की खोज।

ऋग्वैदिक कालीन नदियाँ

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
क्रुमु	कुर्रम
कुंभा	काबुल
वितस्ता	झेलम
असिकनी	चिनाब
पुरुष्णी	रावी
शुतुद्रि	सतलुज
विपाशा	व्यास
सदानीरा	गंडक
दृशद्वंती	घग्घर
गोमल	गोमती
सुवास्तु	स्वात्
सिन्धु	सिन्ध

ऋग्वेद में शब्दों का उल्लेख (बारंबारता)

ऊँ या ओऽम्	1028	ग्राम	13	पिता	335
जन	275	क्षत्रिय	9	शूद्र	1
वर्ण	23	सभा	8	विदथ	122
राष्ट्र	10	अग्नि	200	विष्णु	6
गण	46	गंगा	1	मित्र	1
पूषण	8	विश	171	कुलप	2
गृह	90	ब्राह्मण	14	वैश्य	1
माता	234	सेना	20	समिति	9
राजन्य	1	इन्द्र	250	सोम	120
वरुण	30	गौ	176	यमुना	3
सूर्य	10	अश्व	315	कृषि	24
रुद्र	3	समुद्र	1		

- विधवा अपने मृतक पति के **छोटे भाई (देवर)** से विवाह कर सकती थी, जिसे **नियोग** कहा जाता था।
- स्त्रियाँ शिक्षा ग्रहण करती थी। ऋग्वेद में लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला एवं विश्वारा जैसी विदुषी स्त्रियों का वर्णन है।
- आर्यों का मुख्य पेय पदार्थ सोमरस था।
- ऋग्वैदिक समाज में तीन प्रकार के वस्त्रों का उपयोग होता था–**1.** वास, **2.** अधिवास, **3.** उष्णीष। **अन्दर पहनने** वाले कपड़े को **नीवि** कहा जाता था।

शब्दों का उल्लेख

शब्द	पुस्तक
ओऽम	वृहदारण्यक उपनिषद्
अर्द्धांगिनी (पत्नी)	शतपथ ब्राह्मण
सत्यमेव जयते	मुण्डकोपनिषद्
पाप-पुण्य	ऋग्वेद
स्वर्ग-नरक	ऋग्वेद

- **ऋण देकर** ब्याज लेने वाले व्यक्ति को **वेकनॉट** (सूदखोर) कहा जाता था।
- **'अमाजू'** अविवाहित स्त्रियों को कहा जाता था।
- ऋग्वैदिक काल का मुख्य व्यवसाय **पशुपालन** एवं **कृषि** था।
- कृषि संबंधी प्रक्रिया से सम्बन्धित उल्लेख ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल में मिलता है।
- चारों आश्रमों का वर्णन सर्वप्रथम **जाबालोपनिषद्** में मिलता है।
- अतिथि को **'गोहन्ता'** कहा जाता था तथा गाय को **'अघन्या'** (न मारने योग्य) कहा गया है।
- आर्यों के मुख्य देवता **'इन्द्र'** तथा प्रिय पशु **'घोड़ा'** था।
- वैदिक काल में लोहे को **'श्याम अयस्'** तथा ताँबे को **'लोहित अयस्'** कहा जाता था। आर्यों द्वारा खोजी गई धातु **लोहा** थी।
- **व्यापारी वर्ग** को **'पणि'** कहा जाता था। कारोबार वस्तु-विनिमय प्रणाली पर आधारित था।
- ऋग्वैदिक आर्यों ने देवताओं को तीन भागों में विभक्त किया–
  1. **आकाश के देवता**–सूर्य, द्यौस, मित्र, पूषन, विष्णु, उषा, सविता आदि।
  2. **अंतरिक्ष के देवता**–इन्द्र, मरुत, रुद्र, वायु आदि।
  3. **पृथ्वी के देवता**–अग्नि, सोम, पृथ्वी, वृहस्पति तथा सरस्वती आदि।

  ऋग्वैदिक देवियां–अदिति, ऊषा, पृथ्वी, अरण्यानी, इला

पंच महायज्ञ	
1. बह्मयज्ञ या ऋषियज्ञ	वेदपाठ द्वारा प्राचीन ऋषियों के प्रति श्रद्धा व कृतज्ञता
2. देवयज्ञ	हवन की अग्नि में घी (बलि) की आहुति देकर देवताओं का आह्वान
3. पितृयज्ञ	अपने पूर्वजों को जल व भोजन (श्राद्ध) का तर्पण करके उनके प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति
4. भूतयज्ञ	प्राणीमात्र के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए पशु-पक्षियों, कीटों एवं भूत-प्रेतों की बलि (भोजन) देना।
5. नृयज्ञ या अतिथियज्ञ	अतिथि-सत्कार के माध्यम से मानव के प्रति कृतज्ञता दर्शाना

उत्तर वैदिक काल

- उत्तर वैदिक काल में यज्ञीय कर्मकाण्डों में जटिलता एवं भव्यता आ गई।
- **यज्ञ-विधान** क्रिया **उत्तर वैदिक काल** की देन है।
- **राजसूय यज्ञ** का प्रचलन उत्तर वैदिक काल में हुआ। यह राज्याभिषेक से सम्बन्धित था। इस यज्ञ के दौरान राजा रत्नियों के घर जाता था।
- **अश्वमेध यज्ञ शक्ति** का द्योतक था।
- वाजपेय यज्ञ में **राजा रथों की दौड़** का आयोजन करता था। यह यज्ञ **खान-पान** से सम्बन्धित था।
- **अग्निष्टोम यज्ञ** में अग्नि को पशुबलि दी जाती थी।
- **पूषण ऋग्वैदिक काल** में पशुओं के देवता थे, जो उत्तर वैदिक काल में **शूद्रों के देवता** हो गए।
- **उत्तर वैदिक काल** में इन्द्र के स्थान पर **प्रजापति सर्वाधिक प्रिय** एवं महत्वपूर्ण देवता हो गए।
- उत्तर वैदिक काल में **प्रजापति सृष्टि** के रचयिता, विष्णु विश्व के रक्षक एवं पूषण शूद्रों के देवता थे।
- अथर्ववेद के अनुसार "राष्ट्र राजा के हाथों में हो तथा राजा और देवता मिलकर उसे सुदृढ़ बनाएं।"
- **उत्तर वैदिक काल** में ही सर्वप्रथम **गोत्र** एवं **आश्रम** व्यवस्था का उल्लेख हुआ है।

आश्रम व्यवस्था

- आश्रम व्यवस्था की स्थापना उत्तर वैदिक काल में हुई।
- छांदोग्य उपनिषद में केवल तीन आश्रमों का उल्लेख है।
- सर्वप्रथम जाबालोपनिषद में 4 आश्रम बताए गए है।
- उत्तर वैदिक काल में केवल 3 आश्रमों (ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ व वानप्रस्थ की स्थापना हुई। चौथा आश्रम (संन्यास) महाजनपद काल में स्थापित किया गया)
- गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि इस आश्रम में मनुष्य त्रिवर्ग (पुरूषार्थो) धर्म, अर्थ एवं काम का एक साथ उपभोग करता है।
- इसी आश्रम में त्रि: ऋण से निवृत होता है।

ऋषि ऋण	पितृ ऋण	देव ऋण
↓	↓	↓
ग्रंथों का अध्ययन	पुत्र प्राप्ति	यज्ञ करना

सोलह संस्कार

- **पुनर्जन्म** की अवधारणा पहली बार **वृहदारण्यक** उपनिषद् में आई है।
- **ऐतरेय ब्राह्मण** में चारों वर्णों के कर्तव्यों का वर्णन मिलता है।
- उत्तर वैदिक ग्रंथ छान्दोग्य उपनिषद में तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ) का उल्लेख मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल में लोगों की जीविका का मुख्य आधार कृषि हो गई।
- उत्तर वैदिक काल में खेत जोतने के हल को **सिरा** तथा हल रेखा को **सीता** कहा जाता था।
- **'शतमान'** और **'निष्क'** उत्तर वैदिक कालीन मुद्राएँ थीं।
- भारत का सर्वाधिक प्राचीन दर्शन सांख्य दर्शन है जिसमें प्रकृति को मूल कहा गया है।
- प्रथम बार **पक्की ईंटों** का प्रयोग उत्तर वैदिक काल के **कौशाम्बी** नगर से मिला है।

वेद-उपवेद और उनके रचनाकार

वेद	उपवेद	रचनाकार
ऋग्वेद	आयुर्वेद	धन्वंतरि
यजुर्वेद	धनुर्वेद	विश्वामित्र
सामवेद	गन्धर्ववेद	भरतमुनि
अथर्ववेद	शिल्पवेद	विश्वकर्मा

वेदों के ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्

वेद	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्
(1) ऋग्वेद	ऐतरेय, कौशितकी	ऐतरेय, कौशितकी	ऐतरेय, कौशितकी
(2) सामवेद	ताण्ड्य, पंड्विंश	छान्दोग्य, जैमिनीय	छान्दोग्योषनिषद्, जैमिनीय उपनिषद्
(3) यजुर्वेद	तैत्तिरीय, शतपथ	तैत्तिरीय, शतपथ	तैत्तिरीय, बृहदारयण्यक, ईशोपनिषद्
(4) अथर्ववेद	गोपथ	–	मुण्डकोपनिषद्

आस्तिक षड्दर्शन का संक्षिप्त परिचय

क्र.सं.	दर्शन	प्रवर्तक	अन्य विद्वान/व्याख्याकार
1.	मीमांसा	जैमिनी (मीमांसा-सूत्र)	शबरस्वामी, प्रभाकर, कुमारिल इत्यादि।
2.	वेदान्त	बादरायण (ब्रह्म-सूत्र)	शंकराचार्य, वाचस्पति, रामानुज, माधवाचार्य इत्यादि।
3.	न्याय	गौतम (न्याय-सूत्र)	वात्स्यायन, उदयनाचार्य, जयन्तभट्ट इत्यादि।
4.	वैशेषिक	कणाद (वैशेषिक-सूत्र)	प्रशस्तपाद, केशवमिश्र तथा विश्वनाथ।
5.	सांख्य	कपिल (सांख्य-सूत्र)	ईश्वरकृष्ण (सांख्यकारिका), वाचस्पति इत्यादि।
6.	योग	पतंजलि (योग-सूत्र)	व्यास।

धार्मिक आंदोलन

जैन धर्म

- जैन धर्म का संस्थापक **'सम्राट भरत'** के पिता **ऋषभदेव** को माना गया है।
- पार्श्वनाथ के अनुयायियों को **निर्ग्रन्थ** कहा जाता था।
- महावीर स्वामी जैन धर्म के **24वें** एवं **अन्तिम** तीर्थंकर थे।
- महावीर का जन्म **540 ई.पू.** में **कुण्डग्राम** (वैशाली) में हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ **'ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ'** के सरदार थे और माता त्रिशला (विदेहदत्ता) लिच्छवी राजा चेटक की बहन थी।
- 12 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद महावीर को **जृम्भिक ग्राम** के समीप **ऋजुपालिका नदी** के तट पर साल वृक्ष के नीचे सम्पूर्ण ज्ञान का बोध हुआ। इसी समय से महावीर जिन **(विजेता)** एवं अर्हत **(पूज्य)** और निर्ग्रन्थ **(बंधनहीन)** कहलाए।
- महावीर का विवाह कौण्डिन्य गोत्र की **कन्या यशोदा** के साथ हुआ।
- महावीर की पुत्री का नाम **'अणोज्जा'** या **'प्रियदर्शनी'** था।
- महावीर ने अपने उपदेश **प्राकृत (अर्धमागधी)** भाषा में दिए।
- महावीर ने अपने शिष्यों को 11 गणधरों में विभाजित किया था।
- 30 वर्ष धर्म–प्रचार करने के बाद 468 ई.पू. में (72 वर्ष की आयु) राजगृह के समीप पावापुरी नामक स्थान पर मल्लराजा सृसितपाल के राजप्रासाद में महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्त हुआ था।
- महावीर ने गृहस्थों के लिए पाँच अणुव्रत बताएँ हैं–**1.** सत्य वचन, **2.** अहिंसा, **3.** अस्तेय (चोरी नहीं करना), **4.** अपरिग्रह (सांसारिक वस्तुओं का त्याग), तथा **5.** ब्रह्मचर्य।
- कर्नाटक के **श्रवणबेलगोला** में 10वीं शताब्दी के मध्य में विशाल बाहुबली की मूर्ति (गोमतेश्वर की मूर्ति) का निर्माण किया गया।
- जैन तीर्थंकरों की जीवनी **भद्रबाहु** द्वारा रचित **कल्पसूत्र** में है।

- **कैवल्य जैन** धर्म से सम्बन्धित है।
- जैनियों द्वारा अपने पवित्र ग्रन्थों के लिए सामूहिक रूप से अंग का प्रयोग किया जाता है।
- **मांउट आबू** स्थित दिलवाड़ा मन्दिर जैन समुदाय का पवित्र तीर्थस्थल है।
- जैन साहित्य को **'आगम' (सिद्धान्त)** कहा जाता है। इसके अंतर्गत 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र एवं अनुयोग सूत्र आते हैं।

विभिन्न जैन संगीतियाँ

जैन संगीति	काल	स्थान	शासन काल	अध्यक्ष	परिणाम
प्रथम	300 ई.पू.	पाटलिपुत्र	चंद्रगुप्त मौर्य	स्थूलभद्र	जैन धर्म का श्वेताम्बर एवं दिगम्बर मतों में विभाजन
द्वितीय	द्वितीय शताब्दी ई.पू.	कलिंग	कलिंग राज खारवेल	आचार्य संभूति	जैन धर्म के प्रधान भाग 12 अंगों का संपादन हुआ
तृतीय	प्रथम सदी	आंध्र प्रदेश	–	आचार्य अर्द्धवली	अंगों का संकलन
चतुर्थ	चौथी सदी	वल्लभी	–	आचार्य नागार्जुन सूरि	धर्मग्रंथों का पुन: विवेचन हेतु किया गया
पंचम	पाँचवी सदी	वल्लभी	–	आचार्य देवर्धि क्षमाश्रमण	धर्मशास्त्रों को शुद्ध रूप में संकलन हेतु किया गया

जैन साहित्य

- जैन धर्म के ग्रंथ अर्द्धमागधी (प्राकृत) भाषा में लिखे गए थे।
- भद्रबाहु ने कल्पसूत्र को संस्कृत में लिखा।
- **आचरांग सूत्र:** जैन मुनियों के जीवन के लिए आचार नियम
- **भगवती सूत्र:** महावीर के जीवन तथा कृत्यों एवं समकालीनों का वर्णन। इसमें सोलह महाजनपदों का उल्लेख है।
- **नायाधम्मकहा:** महावीर की शिक्षाओं का संग्रह
- **12 उपांग:** इसमें ब्राह्मणों का वर्णन, प्राणियों का वर्गीकरण, खगोल विद्या, काल विभाजन, मरणोपरान्त जीवन का वर्णन आदि किया गया है।
- **10 प्रकीर्ण:** जैन धर्म से संबंधित विधि विषयों का वर्णन।
- **6 छेदसूत्र:** इसमें भिक्षुओं के लिए उपयोगी नियम तथा विधियों का संग्रह।
- **थेरावलि:** इसमें जैन सम्प्रदाय के संस्थापकों की सूची दी गई है।
- **नादि सूत्र एवं अनुयोग सूत्र:** जैनियों के शब्दकोष हैं। इसमें भिक्षुओं के लिए आचरण संबंधी बाते हैं।

अन्य जैन ग्रंथ

- कुवलयमाला – उद्योतन सूरी
- स्यादवादजरी – मल्ली सेन
- द्रव्यसंग्रह – नेमिचन्द
- चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में मगध में अकाल पड़ने पर जैन भिक्षु भद्रबाहु के नेतृत्व में कर्नाटक चले गए। लेकिन **'स्थूलभद्र'** ने कुछ जैनियों को मगध में ही रोके रखा।
- कालांतर में जैन धर्म दो सम्प्रदायों **दिगम्बर** और **श्वेताम्बर** में विभाजित हो गया।

जैन सिद्धों की पाँच श्रेणियाँ	
1. तीर्थंकर	जिसने मोक्ष प्राप्त किया हो
2. अर्हत	जो निर्वाण प्राप्ति की ओर अग्रसर हो।
3. आचार्य	जो जैन भिक्षु समूह का प्रमुख हो।
4. उपाध्यक्ष	जैन शिक्षक
5. साधु	सभी जैन भिक्षुक।

- श्वेत वस्त्र धारण करने वाले **श्वेताम्बर** तथा नग्न रहने वाले **दिगम्बर** कहलाए।
- **श्वेताम्बर** सम्प्रदाय के उपसम्प्रदाय हैं–पुजेरा, मूर्तिपूजक, डेरावासी, मन्दिर मार्गी, ढूंढिया, स्थानकवासी, साधुमार्गी तथा थेरापंथी।
- **दिगम्बर** सम्प्रदाय के उपसम्प्रदाय हैं–बसीपंथी, तेरापंथी, तीसपंथी, गुमानपंथी।
- पूर्वजन्म के कर्मफल को समाप्त करने एवं वर्तमान जन्म के कर्मफल से बचने हेतु महावीर ने त्रिरत्न का सिद्धांत दिया। जैन धर्म के त्रिरत्न हैं–
  1. **सम्यक् ज्ञान:** जैनधर्म के सिद्धांतों का ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान है।
  2. **सम्यक् दर्शन:** जैन तीर्थंकरों के उपदेशों में दृढ़ विश्वास ही सम्यक् दर्शन है।
  3. **सम्यक् चरित्र:** प्राप्त ज्ञान को कार्यरूप में परिणत करना ही सम्यक् चरित्र है।

प्रमुख जैन तीर्थ स्थल

- **अयोध्या**–यहाँ 5 तीर्थकरों का जन्म हुआ। प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव का जन्म यहीं हुआ था।
- **सम्मेद शिखर**–यहाँ पार्श्वनाथ ने अपना शरीर त्यागा था।
- **पावापुरी**–यहाँ महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था।
- **कैलाश पर्वत**–यहाँ आदिनाथ ऋषभदेव ने निर्वाण प्राप्त किया।
- **श्रवणबेलगोला**–यहाँ गोमतेश्वर बाहुबली की विशाल प्रतिमा है।
- **माउंट आबू**–यहाँ सफेद संगमरमर से बने दिलवाड़ा के जैन मंदिर स्थित है।
- **जैन धर्म को आश्रय प्रदान करने वाले शासक**–बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयिन, चण्डप्रद्योत, महापद्मनंद, धनानंद, चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, सम्प्रति, खारवेल, अमोघवर्ष तथा कुमारपाल।

तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक	
1. ऋषभदेव	बैल
2. अजितनाथ	हाथी
3. संभवनाथ	घोड़ा
4. अभिनंदननाथ	बंदर
5. सुमतिनाथ	चकवा
6. पद्मप्रभ	लाल कमल
7. सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
8. चंद्रप्रभ	चंद्र
9. पुष्पदंत	मगर
10. शीतलनाथ	कल्पवृक्ष
11. श्रेयासनाथ	गैंडा
12. वासुपूज्य	भैंसा
13. विमलनाथ	शूकर
14. अनंतनाथ	सेही
15. धर्मनाथ	वज्र दंड
16. शांतिनाथ	सींगदार हिरण
17. कुंथुनाथ	बकरा
18. अरहनाथ	मत्स्य
19. मल्लिनाथ	कलश
20. मुनिसुव्रतनाथ	कच्छप
21. नेमिनाथ	नीलकमल
22. अरिष्टनेमि (कृष्ण के संबंधी)	शंख
23. पार्श्वनाथ	ऋजदार सर्प
24. महावीर स्वामी	सिंह

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध का जन्म **(563 ई.पू.) कपिलवस्तु** के समीप **लुम्बिनी** वन में हुआ था।
- उनके पिता **शुद्धोधन** कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान थे तथा माता **मायादेवी** कोलीय गणराज्य की कन्या थी।
- गौतम बुद्ध के बचपन का नाम **सिद्धार्थ** था।
- इनकी माता की मृत्यु इनके जन्म के सातवें दिन हो गई थी। इनका लालन-पालन इनकी सौतेली माँ प्रजापति गौतमी ने किया था।

भगवान बुद्ध से सम्बन्धित तथ्य	
महामाया	गौतम बुद्ध की माँ
राहुल	गौतम बुद्ध का पुत्र
चन्ना	बुद्ध का सारथी
चुन्द सुनार	जिसका दिया मांस खाने से बुद्ध की मृत्यु हुई।
कंथक	बुद्ध का प्रिय घोड़ा
सुजाता	कृषक बाला, जिसकी दी गई खीर बुद्ध ने खाई
प्रजापति गौतमी	बुद्ध की मौसी, प्रथम बौद्ध भिक्षुणी
अलार कलाम	जिनसे बुद्ध ने योग एवं उपनिषद की शिक्षा ली।
सुभद्द	जिसे बुद्ध ने अपना अन्तिम उपदेश दिया था
देवदत्त	बुद्ध का चचेरा भाई
अश्वत्थ	वह पीपल वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ।
स्तूप	महापरिनिर्वाण के प्रतीक
वैशाली	यहाँ बुद्ध का अन्तिम वर्षा काल बीता था
सालवृक्ष	जिसके नीचे बुद्ध की मृत्यु हुई।
शुद्धोधन	बुद्ध के पिता एवं शाक्य कुल के मुखिया
यशोधरा	बुद्ध की पत्नी।

- **गौतम बुद्ध** का विवाह 16 वर्ष की आयु में **'यशोधरा'** के साथ हुआ।
- बुद्ध को **सारथी 'चन्ना'** के साथ रथ पर सैर करते हुए चार घटनाओं ने संन्यास की ओर प्रवृत्त किया–**1.** बुढ़ापा, **2.** रोग, **3.** मृत्यु, **4.** एक संन्यासी।

बुद्ध के जीवन के चार स्थल		
1.	लुम्बिनी	जन्म
2.	बोधगया	ज्ञान प्राप्ति
3.	सारनाथ	प्रथम धर्मोपदेश
4.	कुशीनारा	मृत्यु

- सांसारिक दु:खों से व्यथित होकर **सिद्धार्थ** ने **29 वर्ष** की अवस्था में गृहत्याग किया, जिसे बौद्ध ग्रंथों में महाभिनिष्क्रमण कहा गया है।

गौतम बुद्ध के जीवन की घटनाएँ		
1.	महाभिनिष्क्रमण	गृह त्याग की घटना
2.	सम्बोधि	ज्ञान प्राप्त होने की घटना
3.	महापरिनिर्वाण	निर्वाण

- गृहत्याग करने के बाद सिद्धार्थ (बुद्ध) ने वैशाली के **अलार कलाम** से सांख्य दर्शन की शिक्षा ग्रहण की।
- उरुवेला में सिद्धार्थ को **कौणिडिन्य**, **वप्प**, **भद्धिय**, **महाआज** एवं **असराजि** नामक पाँच साधक मिले। बिना अन्न-जल ग्रहण किए 6 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में वैशाख की पूर्णिमा की **रात निरंजना** (फल्गु) नदी के किनारे, **पीपल वृक्ष** के नीचे, सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान-प्राप्ति के बाद **सिद्धार्थ बुद्ध** के नाम से जाने गए तथा वह स्थान बोधगया कहलाया।

बुद्ध के जीवन से जुड़े प्रतीक		
1.	हाथी	बुद्ध के गर्भ में आने का प्रतीक
2.	कमल	जन्म का प्रतीक
3.	सांड	यौवन का प्रतीक
4.	घोड़ा	गृह-त्याग का प्रतीक
5.	पीपल	ज्ञान का प्रतीक
6.	शेर	समृद्धि का प्रतीक
7.	पदचिन्ह	निर्वाण का प्रतीक
8.	स्तूप	मृत्यु का प्रतीक

- बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश **सारनाथ (ऋषिपतनम्)** में दिया, जिसे बौद्ध ग्रंथों में धर्मचक्र प्रवर्तन कहा गया है।
- बुद्ध ने अपने उपदेश जनसाधारण की **भाषा पाली** में दिए।
- बुद्ध ने आनन्द के अनुरोध पर संघ में पहली बार वैशाली में महिलाओं को प्रवेश दिया। संघ में प्रवेश पाने वाली पहली महिला प्रजापति गौतमी थी।
- कहा जाता है कि **बुद्ध की मृत्यु (483 ई.पू.)** 80 वर्ष की आयु में कुशीनारा, (देवरिया, उ.प्र.) में शिष्य चुन्द द्वारा सूकर माँस खिलाए जाने के बाद हो गई।
- **मल्लों** ने अत्यन्त सम्मानपूर्वक **बुद्ध का अंत्येष्टि संस्कार** किया।
- मृत्यु के बाद बुद्ध के शरीर के अवशेषों को आठ भागों में बाँटकर उन पर **आठ स्तूपों** का निर्माण कराया गया।

बौद्ध महासभाएँ

सभा	समय	स्थान	अध्यक्ष	शासनकाल	कार्य विशेषता
प्रथम	483 ई.पू.	राजगृह	महाकश्यप	अजातशत्रु	सुत्तपिटक तथा विनय पिटक का संग्रहण
द्वितीय	383 ई.पू.	वैशाली	सर्वकामी	कालाशोक	बौद्धसंघ स्थविर तथा महासंघिक में बँटा
तृतीय	251 ई.पू.	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक	अभिधम्म पिटक को संकलित कर कथावत्थु को जोड़ा गया
चतुर्थ	प्रथम ई.	कुण्डलवन (कश्मीर)	वसुमित्र 'अध्यक्ष' अश्वघोष 'उपाध्यक्ष'	कनिष्क	विभाषाशास्त्र का संकलन एवं बौद्ध धर्म महायान तथा हीनयान में बँटा।

- **"इच्छा अर्थात् तृष्णा सब कष्टों का कारण है"** इसका प्रचार करने वाला धर्म बौद्ध धर्म है।
- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं–**बुद्ध**, **धम्म** एवं **संघ**।
- बुद्ध ने चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया जो इस प्रकार हैं–**1.** दु:ख, **2.** दु:ख समुदाय, **3.** दु:ख निरोध तथा **4.** दु:ख निरोधगामी प्रतिपदा।
- बौद्ध धर्मग्रंथ के महान टीकाकार बुद्धघोष हैं।
- सांसारिक दु:खों से मुक्ति हेतु, बुद्ध ने आष्टांगिक मार्ग की बात कही।

अष्टांगिक मार्ग

(i) **सम्यक् दृष्टि** वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप का ध्यान रखना।
(ii) **सम्यक् संकल्प** आसक्ति, द्वेष, हिंसा से मुक्त विचार।
(iii) **सम्यक् वाक्** अप्रिय वचनों का परित्याग।
(iv) **सम्यक् कर्मांत्** दान, दया, सत्य, अहिंसा, सत्कर्मों का अनुसरण।
(v) **सम्यक् आजीविका** सदाचार के नियमों के अनुकूल जीवन व्यतीत करना।
(vi) **सम्यक् व्यायाम** विवेकपूर्ण प्रयत्न करना
(vii) **सम्यक् स्मृति** मिथ्या धारणाओं का परित्याग कर सच्ची धारणा रखना।
(viii) **सम्यक् समाधि** मन अथवा चित्त की एकाग्रता।

बौद्ध साहित्य के तीन पिटक निम्नलिखित हैं–
1. सुत्तपिटक – बुद्ध के धार्मिक विचार और वचनों का संग्रह
2. विनय पिटक – बौद्ध दर्शन की विवेचना और नियम
3. अभिधम्म पिटक– बुद्ध के दार्शनिक विचार

- बुद्ध ने मध्यम मार्ग (मध्यमा-प्रतिपदा) का उपदेश दिया।
- अनीश्वरवाद के संबंध में बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म में समानता है।
- सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गान्धार शैली के अंतर्गत किया गया लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति मथुरा शैली के अंतर्गत बनी थी।
- रुम्मिनदेई स्तंभ लेख से बुद्ध के जन्म स्थान का संकेत मिलता है।
- बौद्धों के **प्रस्ताव पाठ** को **अनुसावन** कहा जाता था।
- बौद्ध धर्म में **प्रत्यक्ष मतदान** को **'विवतक'** कहा जाता था।
- बौद्ध संघ में **प्रविष्ट** होने को **उपसम्पदा** कहा जाता था।
- बौद्ध संघों में प्रशासनिक कार्यों के लिए होने वाले **गुप्त मतदान** को **गुल्हक** कहा जाता था।
- बौद्ध धर्म प्रचारक संन्यासी, अनुयायी, 'भिक्षुक' तथा गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म अपनाने वाले **'उपासक'** कहलाए।
- बौद्ध धर्म में **पुनर्जन्म** की मान्यता है।

तृतीय बौद्ध संगीति के बाद अशोक द्वारा भेजे गए धर्म प्रचारक

प्रचारक	स्थान
महेन्द्र एवं संघमित्रा	लंका
रक्षित	उत्तरी कनारा
महादेव	मैसूर
मज्झान्तिक	कश्मीर-गांधार
धर्मरक्षित	पश्चिमी भारत
मज्झिम	हिमालय
महाधर्मरक्षित	यवन राज्य

बौद्ध धर्म के पंथ

वैशाली की द्वितीय बौद्ध संगीति में सर्वप्रथम बौद्धों का **स्थविरवादियों** एवं **महासंघिकों** में विभाजन हुआ; परंतु मुख्य मतभेद चौथी संगीति (कश्मीर) में पैदा हुए तथा इस संगीति में **महायान** एवं **हीनयान** नामक दो मुख्य बौद्ध सम्प्रदाय बन गए। 8वीं सदी ई. के बाद **वज्रयान** भी एक अलग पंथ बन गया।

लघु पंथ–बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद दूसरी तथा तीसरी सदियों में कई उपश्रेणियाँ बन गई। फलतः तीसरी संगीति के काल तक के दो मुख्य समूहों (स्थविरवादी तथा महासंघिक) में से 18 पंथों का उदय हो चुका था। वसुमित्र की 18 पंथों पर लिखित पुस्तक से विभिन्न पंथों के उदय का पता चलता है।

महासंघिकों से निम्नलिखित पंथ उभरे–

1. व्यावहारिक
2. लोकोत्तरवादी
3. काकुत्रिय
4. बहुश्रुतिय
5. प्रज्ञपतिवादी
6. चैत्य-शैल
7. अपर-शैल
8. उत्तर-शैल

स्थविरवादियों से निकले पंथ थे–

1. हेमावत
2. सर्वास्तिवादी
3. वात्सिपुत्रिय
4. भद्रजनिक
5. धर्मोत्तरीय
6. सम्मितिय
7. शन्नागरिका
8. महिपासक
9. धर्म गुप्टिक
10. कस्यपीय अथवा सुवर्षक
11. सौत्रांतिक या संक्रांतिवादिन

प्रमुख बौद्ध विद्वान

1. **अश्वघोष** कनिष्क के समकालीन थे, इन्होंने बुद्धचरितम ग्रंथ की रचना की थी।
2. **नागार्जुन** इन्होंने बौद्ध दर्शन की माध्यमिक विचारधारा का प्रतिपादन किया जो शून्यवाद के नाम से जानी जाती है।
3. **वसुबन्धु** ने बौद्ध धर्म का विश्वकोष कहे जाने वाले अभिधम्म कोश की रचना की।
4. **बुद्धघोष** इनके द्वारा लिखी गयी पुस्तक विशुद्धि मार्ग हीनयान सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रंथ हैं।

शैव धर्म

- **ऋग्वेद** में शिव के लिए **'रुद्र'** नामक देवता का उल्लेख है।
- शैव सम्प्रदाय का प्रथम उल्लेख **पतंजलि के महाभाष्य** में शिव भागवत नाम से हुआ है।
- वामन पुराण में शैव सम्प्रदाय की संख्या चार बताई गई है जो इस प्रकार है–**1.** पाशुपत, **2.** कापालिक, **3.** कालामुख और **4.** लिंगायत।
- **पाशुपत सम्प्रदाय** के अनुयायियों को **पंचार्थिक** कहा गया है। इस मत का प्रमुख सैद्धान्तिक ग्रंथ **पाशुपत सूत्र** है। श्रीधर पंडित एक विख्यात **पाशुपत आचार्य** थे।
- शैवों का सर्वाधिक प्राचीन सम्प्रदाय **पाशुपत सम्प्रदाय** था जिसके संस्थापक **लकुलीश** थे।
- **कापालिक सम्प्रदाय** के **ईष्टदेव भैरव** थे। इस सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र श्री **शैल नामक** स्थान था।
- **कालामुख सम्प्रदाय** के अनुयायियों को शिव पुराण में महाव्रतधर कहा गया है।
- **लिंगायत सम्प्रदाय** (जंगम) दक्षिण में प्रचलित था। इस सम्प्रदाय के लोग **शिवलिंग** की उपासना करते थे।
- **लिंगायत सम्प्रदाय** के प्रवर्त्तक **अल्लभ प्रभु** तथा उनके शिष्य **बासव** थे। इस सम्प्रदाय को **वीरशिव/वीरशैव** सम्प्रदाय भी कहा जाता है।
- **कश्मीरी शैव** शुद्ध रूप से दार्शनिक तथा ज्ञानमार्गी थे। इसके संस्थापक **वसुगुप्त** थे।
- दसवीं शताब्दी में **मत्स्येन्द्रनाथ** ने **नाथ सम्प्रदाय** की स्थापना की। इस सम्प्रदाय का व्यापक प्रचार-प्रसार **बाबा गोरखनाथ** के समय में हुआ।
- **पल्लव काल** में शैव धर्म का प्रचार-प्रसार **नयनारों** द्वारा किया गया उनकी संख्या 63 बताई गई है जिनमें **अप्पर**, **तिरुमूलर**, **संबंदर** एवं **सुन्दरर** आदि प्रसिद्ध हैं।

वैष्णव धर्म

- **भागवत धर्म** के संस्थापक **वृष्णि वंशीय** यादव कुल के नेता **वासुदेव कृष्ण** थे।
- श्रीकृष्ण का उल्लेख सर्वप्रथम **छान्दोग्य उपनिषद** में मिलता है। इसमें श्रीकृष्ण को **देवकी पुत्र** व ऋषि **घोर अंगिरस** का शिष्य बताया गया है।
- तीसरी-चौथी शताब्दी से **भागवत सम्प्रदाय वैष्णव धर्म** में परिवर्तित हो गया।
- **विष्णु के दस अवतारों** का उल्लेख **मत्स्यपुराण** में मिलता है। दस अवतार है–**मत्स्य**, **कूर्म**, **वराह**, **नृसिंह**, **वामन**, **परशुराम**, **राम**, **कृष्ण**, **बुद्ध** और **कल्कि**।
- विष्णु के अवतारों में **'कृष्ण'** अवतार सर्वाधिक लोकप्रिय था।
- नारायण का प्रथम उल्लेख **'शतपथ ब्राह्मण'** में मिलता है।
- भागवत धर्म से सम्बन्धित प्रथम अभिलेख बेसनगर का **गरुड़ स्तम्भ** है।
- **अवतारवाद के सिद्धांत** की अवधारणा सर्वप्रथम **'भगवद्गीता'** में मिलती है।
- चतुर्व्यूह पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख विष्णु संहिता में मिलता है।
- चतुर्व्यूह के चार प्रमुख देवता-**1.** संकर्षण, **2.** प्रद्युम्न, **3.** अनिरुद्ध, **4.** साम्ब।
- पांचरात्र व्यूह के नायक-संकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध एवं कृष्ण थे।
- साम्ब सूर्य पूजा से सम्बन्धित थे, ये पांचरात्र व्यूह में नहीं आते थे।
- तमिल प्रदेशों में यह धर्म अलवार संतों के माध्यम से विकसित हुआ। इन संतों की संख्या करीब 12 थी। इन सब में तिरुमंगाई सर्वाधिक प्रसिद्ध जबकि आण्डाल महिला संत थी।

इस्लाम धर्म

- इस्लाम धर्म के संस्थापक **हजरत मुहम्मद साहब** थे।
- हजरत मुहम्मद साहब का **जन्म 570 ई.** में मक्का में हुआ था।
- हजरत **मुहम्मद साहब** को **610 ई.** में मक्का के पास **हीरा नामक** गुफा में ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- **24 सितम्बर**, **622 ई.** को पैगम्बर की मक्का से मदीना की यात्रा इस्लामी जगत में हिजरत के नाम से जानी जाती है।
- मुहम्मद साहब का विवाह **25 वर्ष** की अवस्था में **खदीजा नामक** विधवा के साथ हुआ था।
- मुहम्मद साहब की पुत्री का नाम **फातिमा** एवं **दामाद** का नाम **अली** है।
- देवदूत **जिब्रियल** ने पैगम्बर मुहम्मद साहब को कुरान अरबी भाषा में संप्रेषित की।
- कुरान इस्लाम धर्म का पवित्र ग्रन्थ है।
- हजरत मुहम्मद साहब की मृत्यु 8 जून, 632 ई. को हुई। इन्हें मदीना में दफनाया गया।
- मुहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् इस्लाम **सुन्नी** तथा **शिया** नामक दो पंथों में विभाजित हो गया।
- सुन्नी उन्हें कहते हैं जो सुन्ना में विश्वास करते हैं। **सुन्ना पैगम्बर** मुहम्मद साहब के कथनों तथा कार्यों का विवरण है।
- शिया **अली की शिक्षाओं** में विश्वास करते हैं तथा उन्हें मुहम्मद साहब का उत्तराधिकारी मानते हैं।
- अली मुहम्मद साहब के दामाद थे।
- अली की **सन् 661** में हत्या कर दी गयी।
- अली के पुत्र **हुसैन की हत्या 680 ई.** में कर्बला नामक स्थान पर कर दी गई।

ईसाई धर्म

- ईसाई धर्म के संस्थापक **ईसा मसीह का जन्म जेरूशलम** के निकट **बैथलेहम** नामक स्थान पर हुआ था।
- ईसाई धर्म का प्रमुख ग्रंथ **बाइबिल** है।
- ईसा मसीह की माता का नाम **मेरी** तथा पिता का नाम **जोसेफ** था।
- ईसा मसीह के प्रथम दो शिष्य **एड्रूंस** एवं **पीटर** थे।
- ईसा मसीह को **33 ई.** में **रोमन गर्वनर पोंटियस** ने सूली पर चढ़ाया।

पारसी धर्म

- पारसी धर्म में पैगम्बर **जुरथ्रुस्ट (ईरानी)** थे। इनकी शिक्षाओं का संकलन **जेन्द अवेस्ता** नामक धार्मिक ग्रथ में है।
- पारसी धर्म के अनुयायी एक ईश्वर **'अहुर'** को मानते हैं।
- इस धर्म के अनुयायिओं को **अग्नि-पूजक** भी कहा जाता है।

धर्म-मत तथा उनके संस्थापक

क्र.सं.	सम्प्रदाय	संस्थापक
1.	पाशुपत	लकुलीश
2.	प्रत्यभिज्ञा	वसुगुप्त
3.	स्पदंस्तार	कलत ओर सोमनांद
4.	लिंगायत	बासव
5.	अद्वैत	शंकराचार्य एवं बादरायण
6.	विशिष्टाद्वैत एवं श्री सम्प्रदाय	रामाजानुचार्य
7.	ब्रह्म सम्प्रदाय	माधवाचार्य
8.	सनक सम्प्रदाय	निम्बकाचार्य
9.	आजीवक	मक्खलि घोषाल
10.	नित्यवादी	प्रकुध कच्चायन
11.	घोर अक्रियवादी	संजय वेट्ठलिपुत्र
12.	भौतिकवादी (यादृच्छाया)	पूरण कश्यप

महाजनपदों का उदय

- छठी शताब्दी ई.पू. में भारतवर्ष 16 जनपदों में बंटा हुआ था। इसकी जानकारी बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रंथ भगवती सूत्र से मिलती है।
- मगध, वत्स, कौशल एवं अवन्ति सर्वाधिक शक्तिशाली जनपद थे।
- मगध के दूसरे नाम मगधपुर, वृहद्रथपुर, वसुमति, कुशाग्रपुर और बिम्बिसारपुरी थे।
- महाजनपदों में अश्मक एकमात्र ऐसा जनपद था जो दक्षिण भारत में स्थित था।
- गान्धार एवं कम्बोज के क्षत्रियों को –शस्त्रोप जीवित: कहा जाता था।

महाजनपद	प्रमुख शासक	राजधानी	वर्तमान स्थान
अंग	ब्रह्मदत्त	चंपा	भागलपुर, मुंगेर (बिहार)
काशी	अजातशत्रु	वाराणसी (उ.प्र.)	इलाहाबाद के आसपास (मगध में मिलाया)
कोसल	प्रसेनजित	श्रावस्ती/साकेत	अवध (उ.प्र.)
वत्स	उद्यन	कौशाम्बी (उ.प्र.)	इलाहाबाद के आसपास
चेदि	शिशुपाल	शक्तिमती/थीवती	बुंदेलखंड (उ.प्र.) द.पू. राजस्थान
मगध	बिम्बिसार, अजातशत्रु	गिरिव्रज/राजगृह	पटना, गया, शाहाबाद (बिहार)
वज्जि	लिच्छवी वंश	वैशाली	वैशाली व उत्तरी बिहार
अवन्ति	चन्ड प्रद्योत	उत्तरी अवन्ति-उज्जैन, दक्षिणी अवन्ति-महिष्मती	द.प. मध्य प्रदेश
मल्ल	–	पावा/कुशीनारा	देवरिया (उ.प्र.)
पांचाल	–	अहिच्छत्र, काम्पिल्य	बरेली, बदायूँ, फर्रूखाबाद (उ.प्र.) रूहेलखण्ड
शूरसेन	–	मथुरा	ब्रजमंडल क्षेत्र (उ.प्र.)
कुरू	–	हस्तिनापुर/इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली, मेरठ एवं हरियाणा
मत्स्य	–	विराटनगर	जयपुर (राजस्थान), भरतपुर
अश्मक	–	पोटली/पोतन	नर्मदा गोदावरी नदी क्षेत्र (द. भारत)
गान्धार	–	तक्षशिला	कश्मीर एवं उ.प. पाकिस्तान, (शिक्षा केन्द्र)
कम्बोज	–	हाटक/राजपुर	राजोरी एवं हजारा क्षेत्र (पाकिस्तान)

मगध का उत्कर्ष

- मगध के प्रारंभिक राजवंश की स्थापना **"वसु"** के पुत्र और **"जरासन्ध"** के पिता **"वृहद्रथ"** ने की।

हर्यक वंश

बिम्बिसार

- बिम्बिसार ने मगध में लगभग **545 ई.पू.** में हर्यक वंश की स्थापना की एवं राजगृह को अपनी राजधानी बनाया।
- जैन साहित्य में इसे श्रेणिक कहा गया है।
- बिम्बिसार ने विजयों तथा वैवाहिक संबंधों के द्वारा वंश का विस्तार किया।
- **प्रथम विवाह** कौशल नरेश प्रसेनजित की बहन महाकौशला से।
- **द्वितीय विवाह** लिच्छिवी गणराज्य के शासक चेटक की बहन चेलना से।
- **तीसरा विवाह** मद्र प्रदेश की राजकुमारी क्षेमा से।
- बिम्बिसार ने अंग महाजनपद को मगध साम्राज्य में मिलाया।
- महात्मा बुद्ध की सेवा में बिम्बिसार ने **राजवैद्य जीवक** को भेजा। अवन्ति के राजा चण्ड प्रद्योत जब पाण्डु रोग से ग्रसित थे उस समय भी बिम्बिसार ने **जीवक** को उनकी सेवा सुश्रुषा के लिए भेजा था।

अजातशत्रु

- अजातशत्रु अपने पिता बिम्बिसार की हत्या कर 493 ई.पूर्व में मगध का शासक बना।
- अजातशत्रु का उपनाम **कुणिक** था, इसे **पितृहंता** शासक कहा गया है।
- अजातशत्रु ने वैशाली के विरुद्ध **'महाशिलाकण्टक'** तथा **'रथमूसल'** नामक अस्त्रों का प्रयोग किया।
- अजातशत्रु का सुयोग्य मन्त्री **वर्षकार** (वस्सकार) था। इसी की सहायता से अजातशत्रु को **वैशाली पर विजय** पाने में सफलता मिली।
- अजातशत्रु ने कोसल के राजा **प्रसेनजित** को पराजित कर **काशी का प्रदेश** प्राप्त किया और उसकी **पुत्री वजिरा** से विवाह किया।

मगध के प्रमुख वंश

वंश	संस्थापक	काल	राजधानी
वृहद्रथ वंश	वृहद्रथ	महाभारत काल	गिरिव्रज (राजगृह)
हर्यक वंश	बिम्बिसार	545 ई.पू.	राजगृह
शिशुनाग वंश	शिशुनाग	412 ई.पू.	वैशाली
नन्द वंश	महापद्मनंद	344 ई.पू.	पाटलिपुत्र

- अजातशत्रु की **हत्या 461 ई.पू.** में उसके **पुत्र उदयन** ने की और स्वयं मगध का शासक बना।

उदयन

- उदयन ने **'गार्गी संहिता'** तथा **'वायु पुराण'** के अनुसार **'पाटलिपुत्र'** नामक राजधानी की स्थापना की।
- बौद्ध ग्रथों में इसे पितृहन्ता कहा गया है।

शिशुनाग वंश

- हर्यक वंश का अन्तिम राजा उद्यन का पुत्र **नागदशक** था जिसकी **हत्या 412 ई.** पूर्व में उसके **अमात्य शिशुनाग** ने कर दी और नए वंश शिशुनाग वंश की स्थापना की।

शिशुनाग (412-394 ई.पू.)

- **शिशुनाग** ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से बदलकर **वैशाली** में स्थापित की।

कालाशोक (394 ई.पू.-366 ई.पू.)

- शिशुनाग का उत्तराधिकारी **कालाशोक** पुनः राजधानी को पाटलिपुत्र ले गया।
- इसके शासन काल में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ।

नन्द वंश

- नंद वंश का संस्थापक **महापद्मनन्द** एक शूद्र शासक था, इसने 'एकराट' एवं 'एकछत्र' की उपाधि धारण की थी।
- पुराणों में **महापद्मनन्द** को 'सर्वक्षत्रान्तक' क्षत्रियों को नाश करने वाला तथा **परशुराम** का अवतार कहा गया है।
- खारवेल के हाथीगुफा अभिलेख से महापद्मनंद की कलिंग विजय की जानकारी मिलती है।
- व्याकरणाचार्य पाणिनी महापद्मनंद के मित्र थे।
- नंदवंश का अन्तिम शासक **घनानंद** था। यह सिकन्दर का समकालीन था।
- घनानंद को ग्रीक लेखकों ने **'अग्रमीज'** एवं **'जैन्द्रमीज'** कहा।

महाजनपद कालीन प्रशासन

- ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।
- ग्राम से ऊपर खटीक एवं द्रोणमुख आते थे।
- शौल्किक अधिकारी व्यापारियों से कर वसूलता था।
- इन काल में राजतंत्र मजबूत हुआ तथा स्वतंत्र नौकरशाही एवं स्थायी सेना अब मुख्य विशेषता बन गयी।
- वस्सकार (मगध) दीर्घ नारायण (कौशल) इस काल के मंत्री थे।
- ग्रामणी ग्राम का प्रशासनिक अधिकारी था।

प्रमुख अधिकारी		
बलिसाधक	–	बलि ग्रहण करने वाला
शौल्किक	–	शुल्क वसूल करने वाला
रज्जुग्राहक	–	भूमि मापने वाला
द्रोपमापक	–	अनाज की तौल का निरीक्षक

इस काल में 60 नगरों का उल्लेख मिलता है। जिनमें 6 महानगर थे।
1. राजगृह **2.** चम्पा **3.** श्रावस्ती **4.** काशी **5.** कौशाम्बी **6.** साकेत (अयोध्या)

विदेशी आक्रमण

ईरानी आक्रमण

- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के ऐखमेनियन (हखमनी) साम्राज्य ने किया।
- डेरियस (दारा) **(532–486 ई.पू.)** ने भारत पर प्रथम सफल आक्रमण किया जिसका प्रमाण बेहिस्तून, पर्सिपोलिस एवं नक्शेरुस्तम अभिलेखों में मिलता है उसने गांधार तथा पंजाब को ईरानी साम्राज्य में मिला लिया।
- 'हैरोडोट्स' (इतिहास के पिता) के अनुसार 'डेरियस' के 20 प्रांतों में अन्तिम प्रांत भारत में था।

यूनानी आक्रमण

- सिकन्दर 20 वर्ष की आयु में **(335 ई.पू.)** पिता **'फिलिप'** की मृत्यु के बाद **'मकदूनिया'** का शासक बना। वह अरस्तू का शिष्य था।
- सिकन्दर ने 326 ई. पूर्व में बल्ख को जीतने के बाद काबुल होते हुए हिन्दूकुश पर्वत पार कर भारत पर आक्रमण किया।
- सिकन्दर ने हाइडेस्पेस (झेलम) के युद्ध **(Battle of Hydaspes)** में भारतीय शासक पोरस को पराजित कर मित्र बना लिया।
- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी को पार करने से इन्कार कर दिया, तत्पश्चात् **सिकन्दर 325 ई.पू.** में भारत से वापस लौट गया। वह भारत में कुल 19 महीने रहा।
- सिकन्दर ने सेनापति **निर्याकस** के अधीन सेना का बड़ा भाग समुद्र के रास्ते भेजा।
- सिकन्दर की **मृत्यु 323 ई.पू.** में बेबीलोन में 33 वर्ष की अवस्था में हो गई।
- सिकन्दर ने भारत में विजय के उपलक्ष्य में **निकेया नगर** एवं अपने घोड़े की याद में **बुकाफेला** नगर का निर्माण किया।

मौर्य साम्राज्य

मौर्यकाल के स्रोत

साहित्यिक स्रोत	पुरातात्विक स्रोत
बौद्ध साहित्य (दीप वंश महावंश, दिव्यावदान, जातक)	चन्द्रगुप्त मौर्य के अभिलेख
जैन साहित्य-कल्पसूत्र	अशोक के अभिलेख
अन्य साहित्य-पुराण, मुद्राराक्षस, इण्डिका, कथासरित सागर, वृहत कथामंजरी	रुद्रदामन के अभिलेख
	मृदभांड
	स्थापत्य कला

चन्द्रगुप्त मौर्य (322-298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य की सहायता से नंदशासक 'घनानन्द' का वध करके मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी।
- नंद वंश का विनाश करने में चन्द्रगुप्त मौर्य ने कश्मीर के राजा पवर्तक से सहायता प्राप्त की थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य को मुद्राराक्षस में **'वृषल'** तथा **'कुलहीन'** कहा गया है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के अन्य नाम सैण्ड्रोकोट्स, एण्ड्रोकोट्स आदि थे।
- 'चन्द्रगुप्त' के प्रशासन का प्राचीन अभिलेखीय साक्ष्य **रुद्रदामन** के **जूनागढ़** अभिलेख से मिलता है।
- भारतीय साम्राज्य का पहला ऐतिहासिक सम्राट **चन्द्रगुप्त मौर्य** को माना जाता है।
- **सेल्यूकस** का राजदूत **मेगास्थनीज** चन्द्रगुप्त के दरबार में आया, जिसने **'इण्डिका'** नामक पुस्तक लिखी।
- मेगास्थनीज ने पाटलिपुत्र को **पालिब्रोथा** कहा है।
- सेल्यूकस निकेटर ने अपनी पुत्री **हेलेना** की शादी चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर दी और चार प्रांत **काबुल**, **कन्धार**, **हेरात** एवं **मकरान** चन्द्रगुप्त को दिए।

मौर्यकालीन शिलालेख

क्र.सं.	शिलालेख	खोज का वर्ष	लिपि
1.	शाहबाजगढ़ी	1836	खरोष्ठी
2.	मानसेहरा	1889	खरोष्ठी
3.	गिरनार	1822	ब्राह्मी
4.	धौली	1837	ब्राह्मी
5.	कालसी	1837	ब्राह्मी
6.	जोगढ़	1850	ब्राह्मी
7.	सोपारा	1882	ब्राह्मी
8.	एर्रागुड़ी	1916	ब्राह्मी

- प्लूटार्क के अनुसार, चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस को **500 हाथी** उपहार में दिए थे।
- प्लूटार्क के अनुसार, चन्द्रगुप्त के पास **6 लाख की पैदल सेना** थी जिसे जस्टिन ने डाकुओं का गिरोह कहा है।

बिन्दुसार (298-272 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य तथा माता **'दुर्धरा'** का पुत्र **'बिन्दुसार'** 298 ई.पू. में मगध की राजगद्दी पर बैठा।
- बिन्दुसार के अन्य नाम हैं–**अमित्रघात**, **अमित्तोकेट्स** (यूनानियों द्वारा), **नन्दसार**, **भद्रसार** (वायुपुराण), **बिन्दुसार** (परिशिष्टपर्वन) तथा **बिन्दुपाल** (चीनी ग्रन्थ)।
- बिन्दुसार के शासनकाल में **'तक्षशिला'** में दो बार विद्रोह हुआ। दूसरे विद्रोह का दमन अशोक ने किया था।
- बिन्दुसार **आजीवक** सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- जैन ग्रंथों में बिन्दुसार को **सिंहसेन** कहा गया है।
- एथीनियस के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एण्टियोकस प्रथम से मदिरा, सूखे अंजीर एवं एक दार्शनिक भेजने की प्रार्थना की थी लेकिन सीरियाई शासक ने दार्शनिक नहीं भेजा।

बिन्दुसार के नाम		
भद्रसार	–	वायुपुराण
अमित्तोकेट्स या अमित्रघात	–	यूनानी लेखक
सिंहसेन	–	जैन ग्रंथ
अलिड्रोकेड्स	–	स्ट्रेबो
बिन्दुपाल	–	चीनी विवरण

अशोक (273-232 ई.पू.)

- बिन्दुसार का उत्तराधिकारी **अशोक महान** हुआ जो 269 ई.पू. में मगध की राजगद्दी पर बैठा।
- **अशोक** की माता का नाम **शुभ्रद्रांगी** था।
- राजगद्दी पर बैठने के समय **अशोक अवन्ती** का राज्यपाल था।
- अशोक ने **99 भाइयों** की हत्या करके सिंहासन प्राप्त किया **(सिंहली स्रोत)**।
- **कारुवाकी** और **तिष्यरक्षिता** अशोक की दो महारानियाँ थी।
- अशोक की पत्नी **'महादेवी'** (शाक्यकुलीन विदिशा की राजकुमारी) से **महेन्द्र** और **संघमित्रा** नामक दो संतान हुई।
- अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र **महेन्द्र** एवं पुत्री **संघमित्रा** को श्रीलंका भेजा।
- **चारुमती** और **संघमित्रा** अशोक की दो पुत्रियाँ थी।
- अशोक ने अपने अभिषेक के आठवें वर्ष लगभग **261 ई.पू.** में **कलिंग** पर आक्रमण किया और कलिंग की राजधानी **तोसली** पर अधिकार कर लिया।

अशोक के नाम		अभिलेख
अशोक मौर्य	–	गिरनार अभिलेख
अशोक वर्द्धन	–	पुराण
पियदस्सी	–	भाब्रु शिलालेख
अशोक	–	मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर, उदगोलम अभिलेख

- "प्लिनी" का कथन है कि मिस्र के राजा (टॉलमी–II) फिलाडेल्फस ने पाटलिपुत्र में डायोनिसियस नामक एक राजदूत भेजा था।

अशोक के लेखों से सम्बन्धित तथ्य

- अशोक नाम का उल्लेख मास्की, नेतूर, गुर्जरा एवं उदगोलम अभिलेखों में है।
- अशोक के अभिलेखों को 1837 ई. में **जेम्स प्रिंसेप** ने सर्वप्रथम पढ़ा।
- टोपरा और मेरठ के स्तम्भों को **फिरोजशाह तुगलक** ने दिल्ली मंगवाया।
- **कौशाम्बी स्तम्भ** को अकबर इलाहाबाद लाया था जिस पर अशोक ने **स्तम्भलेख उत्कीर्ण** करवाये थे।
- **वैराट** का अभिलेख **कनिघंम** कलकत्ता लाया।
- मौर्य साम्राज्य **137 वर्ष** तक रहा। इस वंश का अन्तिम शासक **वृहद्रथ** था।
- **उपगुप्त** नामक बौद्ध भिक्षु ने अशोक को **बौद्ध धर्म** की दीक्षा दी थी।
- प्रादेशिक, रज्जुक, युक्तक को प्रतिवर्ष धर्म प्रचार के लिए भेजा जाता था जो अनुसंधान कहलाता था।
- अशोक ने **भाब्रू शिलालेख** में स्वयं को **'पियदसिम राजा मगधे'** कहा है।
- **मास्की**, **गुर्जरा**, **नेतूर** एवं **उद्गोलम** अभिलेखों में उसका नाम अशोक मिलता है।
- अशोक ने **आजीवकों** के रहने हेतु **बराबर की पहाड़ियों** में चार गुफाओं का निर्माण करवाया, जिनका नाम **कर्ण**, **चोपड़**, **सुदामा** तथा **विश्व झोपड़ी** था।
- अशोक के पौत्र दशरथ ने आजीवकों को **नागार्जुन गुफा प्रदान** की थी।
- अशोक के शिलालेखों में **ब्राह्मी**, **खरोष्ठी**, **ग्रीक** एवं **अरमाइक** लिपि का प्रयोग हुआ है।
- अशोक का सबसे छोटा स्तम्भ-लेख **रुम्मिन्देई** है जिसकी खोज फीहरर ने की। इसी अभिलेख में लुम्बिनी में धम्म यात्रा के दौरान अशोक द्वारा भूराजस्व की दर घटाने की घोषणा की गई है।
- अशोक का **शर-ए-कुना (कंधार)** अभिलेख ग्रीक एवं अरमाइक भाषाओं में प्राप्त हुआ है।
- अशोक के शिलालेखों की खोज 1750 ई. में **टीफेन्थेलर** ने की थी। इनकी संख्या 14 है।
- **अशोक के अभिलेखों** को पढ़ने में सबसे पहली सफलता **1837 ई.** में **जेम्स प्रिंसेप** को मिली।

अभिलेखों में वर्णित विषय

अभिलेख	वर्णित विषय
पहला शिलालेख	1. पशुबलि की निन्दा 2. समाज में उत्सव का निषेध 3. सभी मनुष्य मेरी संतान हैं।
दूसरा शिलालेख	1. लोक कल्याणकारी कार्य 2. चेर, चोल, पांड्य, सत्तियपुत्र का उल्लेख
तीसरा व चौथा शिलालेख	1. धर्म संबंधी नियम 2. रज्जुकों की नियुक्ति 3. महामात्रों को प्रति 5वें वर्ष पर दौरे का आदेश
पांचवाँ शिलालेख	1. धर्म महामात्रों की नियुक्ति के संकेत 2. समाज तथा वर्ण व्यवस्था का उल्लेख
छठा शिलालेख	आत्म संयम की शिक्षा।
सातवाँ-आठवाँ शिलालेख	अशोक की तीर्थयात्राओं का वर्णन
नौवाँ शिलालेख	सच्ची भेंट व शिष्टाचार की व्याख्या
दसवाँ शिलालेख	राजा तथा राज्य कर्मचारियों को सदा प्रजा के हित की चिन्ता करनी चाहिए।
ग्यारहवाँ शिलालेख	धम्म नीति की व्याख्या एवं विशेषता
बारहवाँ शिलालेख	1. स्त्री महामात्रों की नियुक्ति 2. सभी के विचारों एवं सत्कारों के सम्मान की बात
तेरहवाँ शिलालेख	1. कलिंग युद्ध का वर्णन 2. पाँच यूनानी शासकों के नाम-अन्तियोक, अत्तिकिनि, तुरमय, अलिकसुन्दर, मग 3. आटविक राज्यों का उल्लेख
चौदहवाँ शिलालेख	लोगों को धार्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा।

अशोक के स्तम्भ लेख

अशोक के स्तम्भ लेख

क्र.सं.	स्तम्भ लेख	स्थान
1.	प्रयाग स्तम्भ लेख	इलाहाबाद
2.	दिल्ली-टोपरा	दिल्ली
3.	दिल्ली-मेरठ	दिल्ली
4.	रामपुरवा	चम्पारण (बिहार)
5.	लौरिया नन्दन गढ़	चम्पारण (बिहार)
6.	लौरिया अरेराज	चम्पारण (बिहार)

अशोक के स्तम्भ लेख

1. **मेरठ स्तंभ लेख** मेरठ से प्राप्त/फिरोजशाह तुगलक दिल्ली लेकर आया था।
2. **टोपरा स्तंभ लेख** टोपरा गांव (यमुनानगर हरियाणा) से प्राप्त। फिरोजशाह तुगलक दिल्ली लेकर आया था।
3. **प्रयाग स्तंभ लेख** कौशाम्बी (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) से प्राप्त। अकबर द्वारा में लाया गया।
4. **रामपुरवा स्तंभ लेख** से दो स्तंभ लेख प्राप्त एक स्तंभ लेखविहीन। लेखयुक्त स्तंभ पर सिंह की आकृति उत्कीर्ण है वर्तमान में यह राष्ट्रपति भवन में स्थापित है। लेखविहिन स्तंभ पर वृषभ तथा बैल की आकृति उत्कीर्ण है।
5. **लौरिया नंदनगढ़ स्तंभ लेख** चरांख जिला (बिहार) से प्राप्त। मयूर चित्र अंकित।
6. **रूम्मिनदेई स्तंभ लेख** सबसे छोटा स्तम्भ लेख। शासनादेश का (रूम्मिनेदई गंपाल से प्राप्त) विषय आर्थिक।

धम्म प्रचार के लिए भेजे गए व्यक्ति			
1.	महेन्द्र व संघमित्रा		श्रीलंका
2.	मज्झान्तिक	–	कश्मीर व गांधार
3.	महारक्षित	–	यूनान
4.	महाधर्म रक्षित	–	महाराष्ट्र
5.	महादेव	–	मैसूर

मौर्य प्रशासन

- सम्राट की सहायता के लिए एक मन्त्रिपरिषद् होती थी जिसमें सदस्यों की संख्या **12**, **16** या **20** हुआ करती थी।
- साम्राज्य में मन्त्रियों एवं पुरोहित की नियुक्ति के पूर्व इनके चरित्र को काफी **जाँचा-परखा** जाता था, जिसे उपधा परीक्षण कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में तीर्थ का उल्लेख मिलता है। जिसे **महामात्र** भी कहा जाता था। इनकी **संख्या 18** थी।
- **अशोक** के समय मौर्य साम्राज्य में प्रांतों की **संख्या 5** थी। प्रांतों को चक्र कहा जाता था।
- प्रांतों के प्रशासक **कुमार** या **आर्यपुत्र** या **राष्ट्रिक** कहलाते थे।
- प्रांतों का विभाजन विषय में किया गया था, जो **विषयपति** के अधीन होते थे।
- **प्रशासन** की सबसे छोटी इकाई **ग्राम** थी, जिसका मुखिया **ग्रामिक** कहलाता था।
- प्रशासकों में सबसे छोटा **गोप** था, जो **दस ग्रामों** का शासन संभालता था।
- मेगास्थनीज के अनुसार नगर का प्रशासन **30 सदस्यों** का एक मंडल करता था जो **6 समितियों** में विभाजित था। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।
- प्लूटार्क/जस्टिन के अनुसार चन्द्रगुप्त ने नंदों की पैदल सेना से तीन गुनी अधिक संख्या में आदमियों को लेकर सम्पूर्ण उत्तर-भारत को रौंद डाला था।
- युद्ध-क्षेत्र में सेना का नेतृत्व करने वाला अधिकारी नायक कहलाता था।
- सैन्य विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी सेनापति होता था।
- मेगास्थनीज के अनुसार मौर्य सेना का रख-रखाव पाँच सदस्यीय, छह समितियाँ करती थीं।
- केन्द्रीय अधिकारी तंत्र में सबसे ऊंचे **अधिकारी तीर्थ** कहलाते थे, जो निम्नलिखित हैं–

तीर्थ	विभाग
पुरोहित	प्रधानमन्त्री तथा प्रमुख धर्माधिकारी
समाहर्ता	राजस्व विभाग का प्रधान अधिकारी
सन्निधाता	कोषाध्यक्ष
प्रदेष्टा	फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश
नायक	सेना का संचालक
कर्मान्तिक	उद्योग-धंधों का प्रधान निरीक्षक
व्यावहारिक	दीवानी न्यायालय का न्यायाधीश
दण्डपाल	सेना की सामग्रियों को जुटाने वाला प्रधान अधिकारी
आटविक	वन विभाग का प्रधान
अंतपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
दौवारिक	राजमहल की देखभाल करने वाला प्रधान
अंतर्वेदिक	सम्राट की अंगरक्षक सेना का प्रधान
नागरक	नगर का प्रमुख अधिकारी या नगर (पौर) कोतवाल
दुर्गपाल	राजकीय दुर्ग रक्षकों का अध्यक्ष
युवराज	राजा का उत्तराधिकारी
सेनापति	युद्ध विभाग का मन्त्री
मन्त्रिपरिषदाध्यक्ष	परिषद् का अध्यक्ष

- एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करके कार्य करने वाले गुप्तचर को संचार कहा जाता था।
- मौर्य काल में दो प्रकार के न्यायालय थे–**1. धर्मस्थीय** एवं **2. कण्टकशोधन**।
- **धर्मस्थीय**–न्यायालय का **न्यायाधीश–व्यावहारिक**, कण्टकशोधन का **प्रदेष्टि** एवं जनपदीय न्यायालय का **न्यायाधीश राजुक** कहलाता था।
- राज्य के सप्तांग सिद्धांत की व्याख्या सर्वप्रथम कौटिल्य (चाणक्य) ने की थी जिसके अंतर्गत **राजा**, **अमात्य**, **जनपद**, **दुर्ग**, **कोष**, **दण्ड** एवं **मित्र** सम्मिलित थे।

प्रांतीय शासन/प्रशासन

मौर्य साम्राज्य पांच बड़े प्रांतों में विभाजित था।

प्रांत		राजधानी
1. उत्तरापथ	–	तक्षशिला
2. अवन्ति	–	उज्जयिनी
3. दक्षिणापथ	–	सुवर्णगिरी (कर्नाटक)
4. कलिंग	–	तोसली
5. प्राची	–	पाटलिपुत्र

मौर्यकालीन आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था

- राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूमिकर था जो उपज का 1/6 भाग होता था।
- सरकारी भूमि को **सीता भूमि** कहा जाता था।
- बिना वर्षा के अच्छी खेती होने वाली भूमि को **अदेवमातृक** कहा जाता था।
- प्रांतों से कर एकत्रित करने की जिम्मेदारी **स्थानिक** तथा **गोप** नामक अधिकारी की होती थी।
- मौर्यकाल में बलि एक प्रकार का धार्मिक कर था एवं नकद रूप में लिए जाने वाले कर को हिरण्य कहा जाता था।
- मेगास्थनीज ने भारतीय समाज को सात वर्गों में विभाजित किया है–**1.** दार्शनिक, **2.** किसान, **3.** अहीर, **4.** कारीगर, **5.** सैनिक, **6.** निरीक्षक एवं **7.** सभासद।
- अर्थशास्त्र में **शूद्रों** का **आर्य** कहा गया है।
- मौर्यकाल में **सामूहिक समारोह** को **'प्रवहण'** कहा जाता था।
- **मुद्राराक्षस** में चन्द्रगुप्त के राजप्रासाद को **सुभांग** कहा गया है।
- **स्वतन्त्र वेश्यावृत्ति** अपनाने वाली महिला **रूपाजीवा** कहलाती थी।

मौर्योत्तर काल

शुंग वंश

- मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने **185 ई.पू.** में अन्तिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की नींव डाली।
- शुंग काल को **वैदिक प्रतिक्रिया** (पुनर्जागरण) का काल कहा जाता है।
- शुंग शासकों ने अपनी राजधानी विदिशा में स्थापित की।
- **भरहुत स्तूप** का निर्माण **पुष्यमित्र शुंग** ने करवाया।
- गार्गी संहिता के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने यवन शासक डेमेट्रियस के साथ प्रथम युद्ध किया।
- **अयोध्या अभिलेख** के अनुसार **पुष्यमित्र शुंग** ने अपने शासन के अन्तिम दिनों में पतंजलि के नेतृत्व में दो **अश्वमेध यज्ञ** करवाये थे।
- **महाभाष्य** के रचयिता **पतंजलि** पुष्यमित्र के पुरोहित थे।
- पुष्यमित्र की मृत्यु के बाद इस वंश का अगला शासक **अग्निमित्र** बना जो पहले **विदिशा का उपराजा** था।
- शुंग वंश के 9वें शासक भागवत (भागभद्र) के शासनकाल में यवन राजदूत हेलियोडोरस ने भागवत धर्म ग्रहण कर विदिशा (बेसनगर) में गरूड़-स्तम्भ की स्थापना की।

कण्व वंश

- **112 वर्ष शासन** करने के बाद **शुंगवंश** के अन्तिम शासक देवभूति की हत्या (73 ई.पू.) उसके सेनापति **वासुदेव** ने करके **कण्व वंश** की नींव डाली।
- पुराणों के अनुसार कण्वों ने **45 वर्षों** तक शासन किया।
- इस वंश में केवल 4 राजा हुए: **1.** वासुदेव **2.** भूमिमित्र **3.** नारायण **4.** सुशर्मा।

सातवाहन/आंध्र वंश

- सातवाहन वंश के संस्थापक **सिमुक (सिन्धुक, शिपक)** ने अन्तिम कण्व नरेश सुशर्मा की हत्या कर सातवाहन साम्राज्य की स्थापना की।
- शुंग, कण्व तथा सातवाहन तीनों ही ब्राह्मण समुदाय से थे।
- सातवाहन (आन्ध्र वंश) शासकों ने अपनी राजधानी प्रतिष्ठान में स्थापित की। (प्रतिष्ठान महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में है।)

कृष्ण

- यह सिमुक का भाई था। इसने सातवाहन साम्राज्य को नासिक तक बढ़ाया तथा नासिक की गुफाओं का निर्माण किया।

शातकर्णी प्रथम

- इसने अनूप प्रदेश (नर्मदा घाटी) तथा विदर्भ (बरार) पर आधिपत्य स्थापित किया।
- इसने अपनी राजधानी अमरावती (गुण्टूर आंध्र प्रदेश) को बनाया।
- इसने सर्वप्रथम दक्षिणाधिपति की उपाधि धारण की एवं दक्षिण में राज्य बढ़ाया।

हाल

- हाल के सेनापति विजयानन्द ने श्रीलंका पर विजय प्राप्त की।

गौतमीपुत्र शातकर्णी

- यह सातवाहन वंश का महानतम शासक था।
- इसके शासन एवं उपलब्धियों के बारे में जानकारी नासिक अभिलेख से प्राप्त होती है।
- नासिक अभिलेख में इसे 'एकमात्र ब्राह्मण' या 'अद्वितीय ब्राह्मण' कहा गया है।
- इसने खतियदपमादलस की उपाधि धारण की।
- नासिक अभिलेख में इसे 'मुद्रतोयपित वाहन' कहा गया है।

वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी

- यह गौतमीपुत्र शातकर्णी का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था।
- शक शासक रूद्रदामन ने पुलुमावी को 2 बार हराया था परंतु संबंधी होने के कारण बर्बाद नही किया।
- पुलुमावी ने दक्षिणीपथेश्वर की उपाधि धारण की।
- पुलुमावी के समय समुद्र व्यापार एवं नौ-सैनिक शक्ति में पर्याप्त विकास हुआ।

यज्ञश्री शातकर्णी

- यह सातवाहन वंश का अंतिम महत्वपूर्ण शासक था।
- इसके सिक्के पर नाव के चित्र अंकित हैं।

मुद्रा

- मौर्य साम्राज्य की राजकीय मुद्रा पण थी।
  सोने के सिक्के: सुवर्ण एवं पाद
  चांदी के सिक्के: कार्षापण, पण एवं धरण
  तांबे का सिक्का: मासक, काकणी, अर्द्धकाकजी
- सातवाहन शासक शातकर्णी-प्रथम ने **दो अश्वमेध** तथा एक **राजसूय यज्ञ किया** एवं इसने **दक्षिणाधिपति** तथा **अप्रतिहतचक्र** की उपाधि धारण की। वशिष्ठी पुत्र पुलुमावी के सिक्के पर **दो पतवार** वाले जहाज का चित्रण है।
- शातकर्णी के **सिक्के पर नाव** का चित्रण है।
- सातवाहन शासकों के समय के प्रसिद्ध साहित्यकार **हाल** एवं **गुणाढ्य** थे।
- हाल ने **गाथा सप्तशती** की तथा गुणाढ्य ने **वृहत्कथा** नामक पुस्तकों की रचना की।
- सातवाहन शासकों ने **चाँदी**, **ताँबे**, **सीसे**, **पोटीन** और **काँसे** की मुद्राओं का प्रचलन किया।
- ब्राह्मणों को भूमि-अनुदान देने की प्रथा का आरंभ **सातवाहन शासकों** ने ही सर्वप्रथम किया।
- सातवाहनों की **भाषा प्राकृत एवं लिपि ब्राह्मी** थी।
- सातवाहनों का समाज **मातृसत्तात्मक** था।

कलिंग का चेदि वंश

- इस वंश की स्थापना महामेघवाहन ने की थी।

खारवेल

- यह चेदि वंश का सबसे महान शासक था।
- इसके शासन एवं उपलब्धियों के बारे में जानकारी हाथीगुम्फा अभिलेख (उदयगिरी) से प्राप्त होती है।
- खारवेल ने भुवनेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
- हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार खारवेल ने चोल, चेर एवं पाण्ड्य शासकों को पराजित किया था।

भारत में इण्डो-ग्रीक राज्य

- भारत पर मौर्योत्तर काल का प्रथम यूनानी आक्रमणकारी **(183 ई.पू.) डेमेट्रियस प्रथम** था जिसके सेनापति अपोलोड्स तथा मिनान्डर थे।
- डेमेट्रियस ने राजधानी **सियालकोट (साकल)** में बनाई तथा भारतीय उपाधि–**धर्महित**, **अजय**, **इण्डोरम** धारण की।
- इलाहाबाद के रेह नामक स्थान से **मिनाण्डर के अभिलेख** मिले हैं।
- मिनाण्डर को **'एशिया का संरक्षक'** कहा गया है।
- युक्रेटाइडस ने **तक्षशिला** में **राजधानी** बनाई।
- एण्टियाल किडास के शासनकाल में **हेलियोडोरस** ने **विदिशा** में **गरुड़ स्तम्भ** की स्थापना की थी।
- भारतीय संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त शब्द यवनिका (पर्दा) यूनानी भाषा से लिया गया है।
- सर्वप्रथम लेख उत्कीर्ण **सिक्का** एवं **स्वर्ण सिक्का** चलाने का श्रेय यूनानियों को है।
- **मिनाण्डर** एवं **नागसेन** के बीच वार्तालाप का उल्लेख **'मिलिंदपन्हो' नामक ग्रंथ** में वर्णित है।

शक 'सिथियन'

- **'पर्सिपोलिस'** तथा **'नक्शीरुस्तम'** अभिलेखों से शकों की जानकारी मिलती है।
- **शक मूलतः** मध्य एशिया के निवासी थे और चरागाह की खोज में भारत आए।
- शकों की कुल पाँच शाखाएँ थीं–पहली शाखा ने अफगानिस्तान, दूसरी शाखा ने पंजाब (राजधानी-तक्षशिला), तीसरी शाखा ने मथुरा, चौथी शाखा ने पश्चिमी भारत एवं पाँचवीं शाखा ने ऊपरी दक्कन पर प्रभुत्व स्थापित किया।
- शकों का सबसे प्रतापी शासक रुद्रदामन प्रथम था, जिसका शासन **(130–150 ई.)** गुजरात के बड़े भाग पर था। इसने काठियावाड़ की अर्धशुष्क **सुदर्शन झील** (मौर्यों द्वारा निर्मित) का जीर्णोद्धार किया।
- **रुद्रदामन** ने सबसे पहले विशुद्ध संस्कृत भाषा में **गिरनार अभिलेख** जारी किया।
- शकों पर विजय के उपलक्ष्य में 58 ई.पू. में उज्जैन के स्थानीय शासक द्वारा एक नया संवत् विक्रम संवत् चलाया। उसी समय से **'विक्रमादित्य'** एक लोकप्रिय उपाधि बन गयी, जिसकी संख्या भारतीय इतिहास में 14 तक पहुँच गई। गुप्त सम्राट **चन्द्रगुप्त द्वितीय** सबसे विख्यात विक्रमादित्य था।

पार्थियन/'पह्लव'

- पार्थियन मुख्यतः **सीस्तान** तथा **आरकोसिया** के निवासी थे।
- पह्लव वंश का वास्तविक संस्थापक **मिथ्रेडेट्स प्रथम** था।
- भारत में **पहला पार्थियन** शासक **माउस** था।
- सबसे शक्तिशाली पह्लव शासक **गोण्डोफर्नीस (20–41 ई.)** था जिसका उल्लेख तख्तेबही अभिलेख में किया गया है।
- प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक सेण्ट थामस उसी समय भारत आया था।

कुषाण वंश

- कुषाण मूलतः यू-ची जाति की एक शाखा थे जिसका प्रभाव मध्य एशिया, ईरान, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान तक था।
- कुजुल कडफाइसिस **प्रथम (30–80 ई.)** कुषाण वंश का प्रथम शासक था जिसके सिक्कों पर **'युवांग' महाराज, राजाधिराज** आदि उपाधियाँ हैं।
- भारत में कुषाण साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक **विम कडफाइसिस** था। यह शैव मत का अनुयायी था, इसके सिक्कों पर-**शिव, नन्दी** तथा **त्रिशूल** की आकृतियाँ मिलती हैं।
- भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के **विम कडफाइसिस** द्वारा ही चलाए गए थे।
- **कनिष्क सर्वाधिक** (78 ई.) शक्तिशाली कुषाण शासक था।
- कनिष्क की राजधानी पुरुषपुर या **पेशावर** थी। कुषाणों की द्वितीय राजधानी मथुरा थी।
- कनिष्क ने एक संवत् चलाया जो **शक-संवत् (78 ई.)**कहलाता है जिसे भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।
- बौद्ध धर्म की **चौथी बौद्ध संगीति** कनिष्क के शासनकाल में **कुण्डलवन** (कश्मीर) में हुई।
- कनिष्क का राजवैद्य आयुर्वेद का विख्यात **विद्वान चरक** था, जिसने **चरक संहिता** की रचना की।
- महाविभाषा सूत्र के रचनाकार **वसुमित्र** हैं। इसे ही बौद्ध धर्म का **विश्वकोष** कहा जाता है।
- कनिष्क के राजकवि अश्वघोष ने **बौद्धों की रामायण** 'बुद्धचरित' की रचना की।
- **वसुमित्र, पार्श्व, नागार्जुन**, कनिष्क के दरबार की विभूति थे।
- भारत का आइन्सटीन नागार्जुन को कहा जाता है। इनकी पुस्तक **माध्यमिक सूत्र** (सापेक्षता का सिद्धान्त) है।
- कनिष्क बौद्ध धर्म के **महायान सम्प्रदाय** का अनुयायी था।
- **गांधार शैली** एवं **मथुरा शैली** का विकास **कनिष्क** के शासनकाल में हुआ था।
- कुषाण वंश का अन्तिम शासक **वासुदेव** था।
- आरम्भिक कुषाण शासकों ने भारी संख्या में स्वर्ण मुद्राएँ जारी की।
- भारत में सर्वप्रथम **द्वैध शासन** की विचित्र प्रथा की शुरुआत कुषाणों द्वारा की गई।

नाग वंश

- पुराणों के अनुसार **पद्मावती, मथुरा** तथा **नागपुर** में नाग कुलों का शासन था।
- पद्मावती के नाग लोग **'भारशिव'** कहलाते थे।
- मथुरा का **नागवंशी शासक** गणपति नाग एवं पद्मावती का शासक **नागसेन** था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का विवाह नागवंशीय कन्या **'कुबेरनागा'** से हुआ था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने **सर्वनाग** (नाग सरदार) को विषयपति या प्रांतीय गवर्नर नियुक्त किया था।

वाकाटक वंश

- **वाकाटक** (विष्णुवृद्धि गोत्र के ब्राह्मण) वंश का शासन दक्षिण भारत में **तीसरी से छठी शताब्दी** के बीच था। ये शैव भक्त थे।
- वाकाटक, शातकर्णी, कदम्ब एवं चालुक्य शासक स्वयं को **'हरितिपुत्र'** कहते थे।
- वाकाटक शासकों ने **'धर्ममहाराज'** की उपाधि धारण की थी।
- वाकाटक वंश का संस्थापक विन्ध्यशक्ति था जिसे **'वाकाटक वंशकेतु'** कहा गया है।
- वाकाटक शासक **प्रवरसेन प्रथम** ने चार अश्वमेध यज्ञ किए तथा **'सम्राट'** की उपाधि धारण की थी।
- पृथ्वीसेन प्रथम को इलाहाबाद प्रशस्ति में **'कुन्तलेन्द्र'** कहा गया है।
- प्रवरसेन द्वितीय ने प्रवरपुर नामक राजधानी बनाई एवं इसने **'सेतुबंध'** नामक काव्य लिखा था।
- **पृथ्वीसेन द्वितीय** को 'वंश के खोए हुए भाग्य को बनाने वाला' कहा गया है।
- अजन्ता की गुफा **16, 17** और **चैत्यगुफा 19** वाकाटक काल की है।
- **'कालिदास'** ने प्रवरसेन द्वितीय के संरक्षण में **'मेघदूत'** नामक ग्रंथ की रचना की।
- **सर्वसेन** ने प्राकृत भाषा में **'हरिविजय'** नामक काव्य की रचना की थी।

आभीर वंश

- आभीर वंश का संस्थापक **'ईश्वरसेन'** था।
- ईश्वरसेन ने 248–249 ई. में **कलचुरि चेदि संवत्** की स्थापना की थी।

इक्ष्वाकु वंश

इक्ष्वाकु

- ये सातवाहनों के सामन्त थे जो कृष्णा गुण्टूर क्षेत्र में शासन करते थे।
- इस वंश का संस्थापक श्रीशांतमूल था।
- शान्तमूल के उत्तराधिकारी वीर पुरूषदत्त ने नागार्जुनकोण्डा स्तूप का निर्माण करवाया था।
  इक्ष्वाकु शासक बौद्धमत के पोषक थे।
- तीसरी शताब्दी के बाद इक्ष्वाकु राज्य कांचीपुरम के पल्लवों के अधिकार में चला गया।
- इक्ष्वाकु वंश का संस्थापक **'श्रीशान्तमूल'** था।
- पुराणों में इक्ष्वाकु को **श्रीपर्वतीय** तथा **आंध्रभृत्य** कहा गया है।
- इक्ष्वाकु **बौद्ध मत** के संरक्षक थे।

चुटूशातकर्णी वंश

- यह **सातवाहन शासकों** की एक शाखा थी।
- चुटूशातकर्णी वंश का अंत **कदंब शासकों** द्वारा किया गया।

संगम युग

- अशोक के अभिलेखों में–**चोल, चेर** (केरलपुत्र), **पाण्ड्य** और **सतियपुत्र** राज्यों का उल्लेख है।

चोल वंश

- प्राचीन चोल (संगमकालीन) साम्राज्य की राजधानी 'उरैयुर' थी।
- करिकाल द्वारा राजधानी को कावेरीपट्टनम में स्थानांतरित किया गया।
- 9वीं शताब्दी में विजयालय ने तंजौर को राज्य की राजधानी बनाया।
- चोलकालीन मंदिर शिव को समर्पित हैं।
- चोल राज्य पेन्नार एवं कावेरी नदियों के बीच पूर्वी तट पर अवस्थित था।

- विजयालय ने 850 ई. में चोल वंश की स्थापना की, जिसकी राजधानी तंजौर थी।
- विजयालय ने 'नरकेसरी' की उपाधि धारण की और निशुम्भसूदिनी देवी का मंदिर बनवाया।
- आदित्य प्रथम (880–907 ई.) शिव का उपासक था। इसने कोदण्डराम की उपाधि धारण की।
- **परान्तक प्रथम (907–55 ई.)** ने पांड्य शासक राजसिंह द्वितीय को पराजित कर 'मदुरैकोण्ड' की उपाधि धारण की।
- परान्तक प्रथम **तक्कोलम के युद्ध** में राष्ट्रकूट एवं पश्चिम गंग की सम्मिलित सेना से पराजित हुआ।
- **राजराज प्रथम (985–1014 ई.)** ने दक्षिण भारत में स्वायत्तशासी लोकप्रशासन स्थापित किया तथा भूमि की पैमाइश एवं सर्वेक्षण कराया।
- **राजराज प्रथम** ने शैलेन्द्र नरेश श्री **विजयोतुंगवर्मन** द्वारा निर्मित **चूड़ामणि** बौद्ध विहार को आर्थिक सहायता दी।
- राजराज प्रथम **शैव धर्म** का अनुयायी था। इसने तंजौर में राजराजेश्वर का शिव मंदिर बनाया।

चोल अभिलेखों में उल्लेखित करों के नाम

कर का नाम	सम्बन्धित क्षेत्र
आयम	राजस्व
कडिमै	लगान
मरमज्जाडि	वृक्ष कर
किडाक्काशु	नर पशु पर लगने वाला कर

चोल शासकों की प्रशासनिक इकाई	
मण्डलम	प्रांत
कोट्टम	कमिश्नरी
नाडु	जिला
कुर्रम	ग्रामों का संघ
पाडिकावल	गांव की रक्षा के लिए लिया जाने वाला कर
वालल्तिनम्	द्वार कर
मनैइरै	भवन कर (गृहकर)
आजीवक्कवकाशु	आजीवकों पर लगने वाला कर
पेवरि	तेलियों से लिया जाने वाला कर
मगन्मै	कुम्हार, लुहार, सुनार आदि से लिया जाने वाला कर

चोल शासकों द्वारा निर्मित कराए गए मंदिर

राजा	स्थान	मंदिर
विजयालय	नात्तीमलाई	चोलेश्वर मंदिर
आदित्य प्रथम	कुम्भकोणम्	नागेश्वर मंदिर
आदित्य प्रथम	तिरुक्कट्टले	सुरन्देश्वर मंदिर
परान्तक प्रथम	श्रीनिवासनल्लूर	कोरंगनाथ मंदिर
राजराज प्रथम	तंजौर	राजराजेश्वर मंदिर
राजराज द्वितीय	तन्नवेली	विरुवालीश्वरम् मंदिर
कुलोतुंग तृतीय	त्रिभुवनम्	कम्पहरेश्वर मंदिर

- **राजेन्द्र प्रथम (1014–44 ई.)** ने कलिंग और बंगाल पर विजय प्राप्त कर 'गंगैकोण्ड चोल' की उपाधि धारण की।
- राजेन्द्र प्रथम ने विजय की स्मृति में कावेरी तट के निकट **'गंगैकोण्ड चोलपुरम'** नामक नई राजधानी का निर्माण कराया एवं सिंचाई के लिए, चोलगंगम् नामक तालाब बनवाया।
- **राजेन्द्र प्रथम** ने **1017 ई.** में लंका नरेश **महेन्द्र पंचम** को परास्त कर संपूर्ण सिंहल राज्य पर अधिकार कर लिया।
- **राजेन्द्र प्रथम** ने दो बार अपना **दूतमंडल चीन** भेजा था।
- राजेन्द्र प्रथम को **'दक्षिण भारत का नेपोलियन'** कहा जाता है।
- **राजाधिराज प्रथम (1052–54 ई.)** को चालुक्य शासक **सोमेश्वर** ने कोप्पम के युद्ध में पराजित कर मार डाला था।
- **राजेन्द्र द्वितीय** के समय **1055 ई.** में चोल राज्य में अकाल पड़ा।
- चोल शासक अधिराजेन्द्र 1070 ई. में जनविद्रोह में मारा गया था।
- **तुंगभद्रा** के तट पर **विजयस्तम्भ** वीर राजेन्द्र ने स्थापित कराया।

प्रमुख चोल शासकों की उपाधियाँ	
परान्तक प्रथम	मदुरैकोण्ड
राजराज प्रथम	राजकेसरी, अरुमोलि, मुमाडिचोल देव, चोलमण्ड, काण्डलूर
राजेन्द्र प्रथम	'गंगईकोण्डचोल', मुडिगुंडचोल, कदान्नग्गोण्ड, पण्डितचोल
कुलोतुंग प्रथम	शुंगम विवर्त, कटैकोण्डचोलन, मलैनडु कोण्डचोलन

- **कुलोतुंग प्रथम (1070–1120 ई.)** ने 1087 ई. में लंका नरेश विजयबाहु से संधि की तथा अपनी पुत्री का विवाह **सिंहल राजकुमार** से किया।
- **कुलोतुंग प्रथम** ने 1077 ई. में 72 सदस्यों वाले प्रतिनिधिमंडल को चीन भेजा था।
- व्यापारिक वस्तुओं से कर हटा लेने के कारण **कुलोतुंग प्रथम** को **'शुंगमविवर्त'** कहा गया।
- **कुलोतुंग-II** ने **चिदम्बरम् मंदिर** में स्थित **गोविन्दराज (विष्णु)** की मूर्ति समुद्र में फेंकवा दी। कालान्तर में **वैष्णव आचार्य रामानुजाचार्य** ने उक्त मूर्ति का पुनरुद्धार किया और उसे **तिरुपति के मंदिर** में पुनः प्रतिष्ठित किया।
- चोल वंश का अन्तिम राजा **राजेन्द्र तृतीय** था।
- राजा के व्यक्तिगत **अंगरक्षकों को वेडैक्कार** कहा जाता था।
- **पेरुन्दरम्** चोल प्रशासन में भाग लेने वाले **उच्च पदाधिकारियों** को एवं **शेरुन्दरम निम्न श्रेणी के पदाधिकारियों** को कहा जाता था।
- चोलों की राजधानी क्रमानुसार–**उरैयूर**, **तंजौर**, **गंगेकोंडचोलपुरम्** एवं **काँची** थी।
- चोल साम्राज्य 6 प्रशासनिक ईकाइयों में विभक्त था–**राज्य** → **मंडलम्**, **प्रांत** → **वलनाडु**, **जिला** → **नाडु**, **कुर्रम/कोट्टम**।
- द्वितीय पांड्य साम्राज्य में भूमि माप का उल्लेख थलवईपुरम की ताँबे की प्लेटों में किया गया है।
- सोमदेव ने कथासरितसागर नामक पुस्तक लिखी।
- विक्रमांकदेवचरित के लेखक विल्हण थे।
- खजुराहो मंदिरों का निर्माण 10वीं से 12वीं सदी ई. में चंदेल शासकों के शासनकाल में हुआ।

चेर वंश

- चेर राज्य (केरल) पाण्ड्य देश के पश्चिम और उत्तर में समुद्र और पहाड़ों के बीच एक संकरी पट्टी में स्थित था।
- चेर वंश का प्रथम शासक उदयिन जेरल था। इसे लाल चेर भी कहा जाता था।
- चेर शासक उदयिन जेरल ने 'पत्तिनी' या 'कण्णगी' पूजा को प्रारंभ कराया।
- चेर शासक पेरुनजेरल इम्पोरई विद्वानों का संरक्षक था। इसने कई यज्ञ सम्पन्न कराएँ। इसी काल में दक्षिण में गन्ने की खेती की शुरुआत हुई।
- अन्तिम चेर शासक मांदरजेरल इरम्पोरई था जिसे हाथी की आँख वाला कहा जाता था।

पाण्ड्य वंश

- पाण्ड्यों की **राजधानी मदुरा** थी। पाण्ड्यों का उल्लेख सर्वप्रथम मेगास्थनीज ने किया है।
- पाण्ड्य राज्य का प्रतीक **चिह्न मछली** था। पाण्ड्य राज्य मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।
- पाण्ड्य शासक नेडियोन की जानकारी पत्तुपात्तु में संकलित **मनुडिकिलार** तथा **नक्कीरर** की कविताओं से मिलती है। इसने सागर पूजा की प्रथा आरंभ करवाई।
- पाण्ड्य शासक **नेदुंजेलियन** के कुशल शासन की जानकारी **मदुरैकांजी** से मिलती हैं।
- नेदुंजेलियन ने **निर्दोष कोवलन** को हार चुराने के आरोप में मृत्युदंड दिया जिसकी सच्चाई का पता चलने पर उसने **खुद आत्महत्या** कर ली।

संगमकालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक अवस्था

- संगम साहित्य के अनुसार समाज पाँच वर्गों में बंटा था–**ब्राह्मण** (समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त), **अरसर** (शासक वर्ग), **बेनिगर** (वणिक वर्ग), **वल्लाल** (बड़े कृषक), **वेल्लार** (मजदूर कृषक वर्ग)।
- वेल्लार वर्ग के मुखिया को **वेल्लरि** कहा जाता था।
- संगम काल में **कडैसियर** निम्न जाति के लोग थे जो कृषि कार्य करते थे एवं पुल्लैयन रस्सी बनाने वाली एक जाति थी।

- संगम काल में **दास प्रथा** का उल्लेख नहीं मिलता है यद्यपि **सती प्रथा** का प्रचलन था।
- संगम काल में मुख्य स्थानीय देवता **मुरुगन** थे जो आरंभिक मध्यकाल में **सुब्रह्मण्यम** या **कार्तिक** कहलाने लगे। इनका प्रतीक **चिह्न मुर्गा** (कुक्कुट) माना जाता है।

संगम काल की क्षेत्रीय विशिष्टताएँ

क्र.सं.	तिनई (क्षेत्र)	अगम (प्रेम)	पुरम (युद्ध)	निवासी	देवतागण
1.	कुरिंजी (पहाड़िया)	विवाह-पूर्व प्रेम	पशुओं की लूट	कुरुवर (पहाड़िया)	मुरुगन, सुब्रह्मण्यम, स्कंद कार्तिकेय, सेयन
2.	पलाई (शुष्कभूमि)	प्रेमियों का लंबा विरह	अग्निहन, विध्वंस	मरवर (योद्धा)	कोर्रवै, दुर्गा।
3.	मुल्लै (वन प्रदेश)	संक्षिप्त विरह काल	छापामार अभियान	कुरुम्बर (गडरिए)	कृष्ण, तिरुमल मेयन
4.	मरुदम (मैदानी इलाके)	विवाहेत्तर प्रेम	घेराबंदी	उलवर (कृषक)	सेनन, इंद्र
5.	नेडल (तटीय इलाके)	मछुआरों की पत्नियों का अलग होना	स्थायी पारंपरिक युद्ध	पटदावर (मछुवारे)	वरुण, काडलर

संगमकालीन साहित्य

- ईसा की प्रारंभिक शताब्दी में संकलित **संगम साहित्य** में **पाण्ड्य राजाओं** का उल्लेख है।
- प्रथम संगम **मदुरा** में **अगस्त्य ऋषि** की **अध्यक्षता** में हुआ।
- द्वितीय संगम का आयोजन स्थल **कपाटपुरम** (अलवै) में हुआ। यह संगम **तोल्कापियर** एवं **अगस्त्य ऋषि** की अध्यक्षता में हुआ।
- तृतीय संगम **नक्कीरर** की अध्यक्षता में **उत्तरी मदुरा** में आयोजित किया गया संगम साहित्य में उपलब्ध समस्त **तमिल ग्रंथ** इसी संगम से सम्बन्धित है।

गुप्त काल

- घटोत्कच गुप्त श्री गुप्त का उत्तराधिकारी था।
- **श्रीगुप्त** ने **275 ई.** में गुप्त राजवंश की स्थापना की थी।
- गुप्तों के **पूना** एवं **सिद्धपुर** ताम्रपत्र अभिलेखों में **घटोत्कच (280–319)** को प्रथम **गुप्त राजा** कहा गया है।
- प्रसिद्ध गुप्त संवत् **319 ईस्वी** से शुरु किया गया था।
- घटोत्कच्च ने भी महाराज की उपाधि धारण की थी।
- **चन्द्रगुप्त प्रथम** (319–335 ई.) **महाराजा की उपाधि** धारण करने वाला यह प्रथम गुप्त शासक था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने **लिच्छवी** राजकुमारी के साथ विवाह किया।
- **समुद्रगुप्त** (335–375 ई.) का वास्तविक नाम **'काच'** था, विजयों के उपरान्त इसने **समुद्रगुप्त** नामक उपाधि धारण की। यह **विष्णु** का उपासक था।
- समुद्रगुप्त का दरबारी कवि **'हरिषेण'** था जिसने इलाहाबाद के प्रयाग प्रशस्ति लेख में समुद्रगुप्त की विजयों का वर्णन किया।
- वी.ए. सिमथ, ने समुद्रगुप्त को **'भारतीय नेपोलियन'** कहा। इसने धरणिबन्ध (पृथ्वी को बांधना) अपना वास्तविक लक्ष्य बनाया।
- समुद्रगुप्त ने महान बौद्ध भिक्षु **वसुबन्धु** को संरक्षण दिया था।
- समुद्रगुप्त संगीत-प्रेमी था। ऐसा अनुमान उसके सिक्कों पर उसे **वीणा-वादन** करते हुए चित्र से लगाया गया है।
- श्रीलंका नरेश मेघवर्मन ने समुद्रगुप्त से **'गया'** में एक बुद्ध मंदिर बनवाने की अनुमति मांगी थी।

गुप्तकालीन आर्थिक शब्दावली	
भाग	राजा को भूमि उत्पादन से प्राप्त होने वाला हिस्सा
भोग	राजा को उपहार स्वरूप मिलने वाला कर
उपरंग	स्थायी काश्तकारों के लिए कर
उपरिकर	अस्थायी कृषकों के लिए कर
हिरण्य	द्रव्य (नकद) रूप से लिया जाने वाला कर
विष्टि	निःशुल्क या बेगार श्रम
दीनार	स्वर्णमुद्राएँ
अग्रहार	मंदिरों एवं ब्राह्मणों को दान की जाने वाली भूमि

गुप्तकालीन रचनाएं

1. मालविकाग्निमित्रम्-कालिदास-अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–कालिदास–दुष्यन्त एवं शकुन्तला की प्रेम कथा
3. मुद्राराक्षस– विशाखदत–चन्द्रगुप्त मौर्य कालीन विश्लेषण एवं कथा
4. विक्रमोवर्शीयम्–कालिदास–सम्राट पुरूरवा एवं अप्सरा उर्वशी की प्रेम कथा
5. मृच्छकटिकम्–शूद्रक–चारूदत्त एवं वसन्तसेना की प्रेम गाथा
6. स्वप्नवासदत्तम–भास–महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेम कथा
7. देवीचन्द्रगुप्तम्–विशाखदत्त–चन्द्रगुप्त-II द्वारा शक राजा का वध एवं ध्रुव देवी (रामगुप्त की पत्नी) से विवाह

अन्य रचनाएं

दशकुमारचरित	–	दंडी
काव्यादर्श	–	दंडी
अमरकोष	–	अमर सिंह
वृहतसंहिता	–	वराहमिहिर
पंच सिद्धांतिका	–	वराहमिहिर
ब्रह्म सिद्धांत	–	आर्यभट्ट
सूर्य सिद्धांत	–	आर्यभट्ट
आर्यभटीय	–	आर्यभट्ट
पंचतंत्र	–	विष्णु शर्मा
कामसूत्र	–	वात्स्यायन
चरक संहिता	–	चरक

समुद्रगुप्त के पदाधिकारी	
संधिविग्रहिक	संधि एवं युद्ध का मन्त्री
कुमारामात्य	गुप्त साम्राज्य का सबसे बड़ा अधिकारी
खाद्यटपाकिक	राजकीय भोजनालय का अध्यक्ष
महादण्डनायक	न्यायाधीश

- समुद्रगुप्त के प्रयाग अभिलेख में उसे **'लिच्छवी दौहित्र'** बताया गया है।
- **रामगुप्त** ने शक राजा से पराजित होकर प्रजा की रक्षा हेतु अपनी पत्नी **ध्रुवदेवी** को शक शासक को देना स्वीकार किया था।
- **चन्द्रगुप्त-II (375–414 ई.)** ने नागवंश की राजकुमारी 'कुबेरनागा' से विवाह किया।
- चन्द्रगुप्त–II ने उज्जैन को गुप्त साम्राज्य की दूसरी राजधानी बनाया।
- शकों पर विजय के उपलक्ष्य में चन्द्रगुप्त–II ने चाँदी के सिक्के चलाए।
- चन्द्रगुप्त–II के शासनकाल में संस्कृत भाषा के सबसे प्रसिद्ध कवि कालिदास थे।
- चन्द्रगुप्त–II के दरबार में रहने वाले नवरत्न थे–**वराहमिहिर**, **अमरसिंह**, **कालिदास**, **बेतालभट्ट**, **घटकर्पर क्षपणक**, **वररुचि**, **शंकु**, **धन्वंतरि** (आयुर्वेदाचार्य) आदि।

- चन्द्रगुप्त के व्याघ्र शैली के सिक्के मिले हैं।
- महरौली का **लौह-स्तम्भ** गुप्त शासक **चन्द्रगुप्त द्वितीय** ने बनवाया था।
- दक्षिण दिल्ली में महरौली स्थित लौह स्तम्भ में **चन्द्र नामक शासक** की विजयों का उल्लेख है।
- चीनी यात्री **फाह्यान (399–411 ई.)** चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय भारत आया।
- फाह्यान ने नालंदा में बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र की अस्थियों से निर्मित स्तूप का उल्लेख किया है।
- **कुमारगुप्त प्रथम** (415–455 ई.) को **'महेन्द्रादित्य'** भी कहा जाता है।
- कुमारगुप्त प्रथम के काल में **'पुष्यमित्र'** नामक जाति ने आक्रमण किया था।
- कुमारगुप्त प्रथम के काल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।
- **स्कन्दगुप्त** (455–467 ई.) के समय खुशनेवाज के नेतृत्व में सर्वप्रथम हूणों ने भारत पर आक्रमण किया था।
- हूणों को परास्त कर स्कन्दगुप्त ने **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की।
- स्कन्दगुप्त को **'शुक्रादित्य'**, **'देवराय'** तथा **'परिक्षिप्तवृक्षा'** कहा गया है।
- स्कन्दगुप्त ने गिरनार पर्वत पर स्थित **सुदर्शन झील** का पुनरुद्धार किया।
- स्कन्दगुप्त ने पर्णदत्त को सौराष्ट्र का गवर्नर नियुक्त किया।
- **अन्तिम गुप्त** शासक **भानुगुप्त** था।

गुप्तकालीन स्थापत्य

- गुप्तकाल को भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का स्वर्णयुग माना जाता है।

गुप्तकाल के प्रमुख मंदिर

(i) देवगढ़ का दशावतार मंदिर – ललितपुर (उत्तर प्रदेश)
(ii) तिगंवा का विष्णु मंदिर – जबलपुर (मध्य प्रदेश)
(iii) एरण का विष्णु मंदिर – सागर (मध्य प्रदेश)
(iv) भूमरा का शिव मंदिर – सतना (मध्य प्रदेश)
(v) नचना कुठार का पार्वती मंदिर – पन्ना (मध्य प्रदेश)
(vi) भीतर गांव का कृष्ण मंदिर – कानपुर (उत्तर प्रदेश)
(vii) नागोद का शिव मंदिर – सतना (मध्य प्रदेश)

गुप्तशासक एवं अभिलेख	
समुद्रगुप्त	प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख
कुमारगुप्त	बिलसड़ स्तम्भ लेख
स्कन्दगुप्त	भीतरी स्तम्भलेख

प्रशासनिक एवं आर्थिक व्यवस्था

- गुप्त साम्राज्य की सबसे बड़ी प्रादेशिक इकाई **'देश'** थी, जिसके शासक को **गोप्ता** कहा जाता था। एक दूसरी प्रादेशिक इकाई **भुक्ति** थी, जिसके शासक **उपरिक** कहलाते थे।
- भुक्ति के नीचे **विषय** नामक प्रशासनिक इकाई होती थी, जिसके प्रमुख **विषयपति** कहलाते थे।
- पुलिस विभाग का मुख्य अधिकारी **दण्डपाशिक** कहलाता था।
- पुलिस विभाग के साधारण कर्मचारियों को **चारण** एवं **भाट** कहा जाता था।

विभिन्न प्रकार के कर

1. धान्य – अनाज में राजा का हिस्सा
2. चाट – लुटेरों से बचाने के लिए कर
3. भट्टकर – पुलिस कर
4. प्रणय – अनिवार्य कर
5. विष्टि – बेगार कर

गुप्त कालीन विद्वान	
वत्स भट्टी	रावणवध
भास	स्वप्नवासवदत्तम्, चारूदत्तम्
अमर सिंह	अमरकोश
शूद्रक	मृच्छकटिकम्
वराहमिहिर	वृहत्संहिता, पंचसिद्धान्तिका
आर्यभट्ट	सूर्य सिद्धांत, आर्यभटीय
ब्रह्मगुप्त	ब्रह्म सिद्धांत
राजशेखर	काव्यमीमांसा
वागभट्ट	अष्टांग हृदय (चिकित्सा से सम्बन्धित)
बाणभट्ट	हर्षचरित
धन्वंतरि	शल्यशास्त्र (चिकित्सा से सम्बन्धित)

गुप्तकालीन महत्वपूर्ण मंदिर

मंदिर	स्थान
विष्णु मंदिर	तिगवा (जबलपुर मध्य प्रदेश)
शिव मंदिर	भूमरा (नागौद, मध्य प्रदेश)
पार्वती मंदिर	नचना कुठार (मध्य प्रदेश)
दशावतार मंदिर	देवगढ़, (झांसी, उत्तर प्रदेश)
शिव मंदिर	खोह (नागौद, मध्य प्रदेश)
भितरगाँव का मंदिर	भितरगाँव (कानपुर, उत्तर प्रदेश)

- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई **ग्राम** थी। ग्राम का प्रशासन ग्रामसभा द्वारा संचालित होता था। ग्रामसभा का मुखिया **ग्रामिक** कहलाता था एवं अन्य सदस्य **महत्तर** कहलाते थे।
- ग्राम समूहों की छोटी इकाई को **पेठ** कहा जाता था।
- गुप्त शासक कुमारगुप्त के **दामोदरपुर ताम्रपत्र** में भूमि बिक्री संबंधी अधिकारियों के क्रियाकलापों का उल्लेख है।
- भू-राजस्व कुल उत्पादन का **1/4** से **1/6** भाग तक हुआ करता था।
- गुप्तकालीन सोने के सिक्कों को **दीनार** एवं **चांदी** के सिक्कों को रुप्यक कहा जाता था।

गुप्त साम्राज्य के प्रशासनिक अधिकारी

महाबलाधिकृत – सेनापति
महादण्डनायक – न्यायाधीश
दण्डपाशिक – पुलिस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी
सन्धिविग्रहिक – युद्ध तथा संधि से संबंधित विदेश मंत्री
विनय स्थिति – शिक्षा एवं धार्मिक मामलों का प्रधान
महाअक्षपटलिक – लेखा विभाग का सर्वोच्च अधिकारी
चौरोद्धरणिक – गुप्तचर विभाग का प्रधान

सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवस्था

- कायस्थों का सर्वप्रथम वर्णन **याज्ञवल्क्य स्मृति** में मिलता है जबकि जाति के रूप में कायस्थों का सर्वप्रथम वर्णन ओशनम् स्मृति में मिलता है।
- सती होने का प्रथम **अभिलेखीय साक्ष्य 510 ई.** के भानुगुप्त के **एरण अभिलेख** से मिलता है।
- गुप्तकाल में **वेश्यावृत्ति** करने वाली महिलाओं को **गणिका** कहा जाता था। वृद्ध वेश्याओं को **कुट्टनी** कहा जाता था।
- अजन्ता में निर्मित कुल 29 गुफाओं में वर्तमान में केवल 6 ही शेष हैं, जिनमें गुफा संख्या **16** एवं **17** ही **गुप्तकालीन** है। इसमें गुफा संख्या 16 में उत्कीर्ण मरणासन्न राजकुमारी का चित्र प्रशंसनीय है।
- अजंता की गुफाएँ बौद्धधर्म की **महायान शाखा** से सम्बन्धित हैं।
- गुप्तकाल में विष्णु शर्मा द्वारा लिखित **पंचतंत्र (संस्कृत)** को संसार का सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ माना जाता है। बाइबिल के बाद इसका स्थान दूसरा है।
- **याज्ञवल्क्य**, **नारद**, **कात्यायन** एवं **वृहस्पति** स्मृतियों की रचना गुप्तकाल में ही हुई।

- **चन्द्रगुप्त–II** के दरबार के प्रमुख विद्वान आर्यभट्ट ने आर्यभटीय एवं **सूर्य सिद्धान्त** नामक ग्रंथ लिखे एवं दशमलव प्रणाली का विकास किया। सर्वप्रथम इन्होंने ही बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।
- **वराहमिहिर प्रसिद्ध** खगोल शास्त्री थे। इन्होंने **वृहतसंहिता** तथा **पंचसिद्धान्तिका** नामक ग्रंथों की रचना की।
- ब्रह्मगुप्त ने **ब्रह्म सिद्धान्त** नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें उन्होंने बताया कि प्राकृतिक नियमानुसार समस्त वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।
- वागभट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध **ग्रंथ अष्टांग** हृदय की रचना की।
- **'तिगिन'** को हूणों का प्रथम राजा माना गया है।

धार्मिक स्थिति

- मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण हुआ।
- अवतारवाद की अवधारणा का उदय।
- ब्राह्मण धर्म के अंतर्गत वैष्णव एवं शैव भक्ति का विकास।
- नव हिन्दू धर्म की शुरुआत इसी काल में हुई।
- वैष्णव धर्म सबसे प्रधान बन गया। शैव सम्प्रदाय को भी संरक्षण मिला।
- त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की संकल्पना इसी काल में विकसित हुई।

गुप्तोत्तर काल

- गुप्त वंश के पतन के बाद अनेक क्षेत्रीय राजवंशों का उद्भव हुआ, जिनमें **मैत्रक**, **मौखरी**, **पुष्यभूति**, **परवर्ती गुप्त** और **गौड़** प्रमुख थे।

वल्लभी का मैत्रक् वंश

- इस वंश का संस्थापक भट्टार्क था।
- ध्रुवसेन द्वितीय हर्षवर्द्धन का समकालीन था। इसी के समय ह्वेनसांग ने वल्लभी की यात्रा की थी।
- ध्रुवसेन चतुर्थ ने **परमभट्टारक**, **महाराजाधिराज**, **परमेश्वर** तथा **चक्रवर्ती** की उपाधि धारण की थी। भट्टी इसका दरबारी कवि था।

मौखरी वंश

- इस वंश का संस्थापक मुखर था।
- ग्रहवर्मा अन्तिम मौखरी शासक था। इसका विवाह हर्षवर्द्धन की बहन से हुआ था।

उत्तरगुप्त वंश

- इस वंश की जानकारी के स्रोत अफसढ़ तथा देववर्नाक के अभिलेख से प्राप्त होते हैं।
- कृष्णगुप्त को अफसढ़ अभिलेख में **'नृप'** कहा गया है।
- जीवित गुप्त ने **क्षितीशचूड़ामणि** की उपाधि धारण की।
- देवगुप्त का उल्लेख **मधुवन** तथा **बांसखेड़ा** अभिलेखों में हुआ है।
- जीवितगुप्त द्वितीय को **यशोवर्मन** ने पराजित कर **परवर्ती गुप्त** राज्य का अंत कर दिया।

थानेश्वर का वर्द्धन वंश

- इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति था।
- हरियाणा के अम्बाला जिले के थानेश्वर नामक स्थान पर 'पुष्यभूति वंश' की स्थापना की गई।
- **राज्यवर्द्धन** के पश्चात् 16 वर्ष की उम्र में **606 ई.** में हर्ष **थानेश्वर** का शासक बना।
- **हर्ष** और चालुक्य राजा **पुलकेशिन द्वितीय** के बीच (623 ई.) नर्मदा नदी के पास युद्ध हुआ, जिसमें **हर्षवर्द्धन** पराजित हुआ।

हर्ष के समय महत्वपूर्ण अधिकारी	
महाबलाधिकृत	मुख्य सेनापति
अमात्य	मन्त्रिपरिषद् के मन्त्री
अपरिक	भुक्ति का प्रशासक
दण्डपाशिक	पुलिस अधिकारी
वृहदेश्वर	अश्व सेना का अधिकारी
बलाधिकृत	पैदल सेना का अधिकारी
स्कंदगुप्त	गजसेना का मुख्य अधिकारी
कुंतल	अश्वसेना का प्रधान अधिकारी
अवंति	शांति एवं युद्ध का मन्त्री

- हर्ष को उत्तरी **भारत का स्वामी** कहा जाता था।
- हर्ष की उपाधि **'शिलादित्य'** तथा **'परमभट्टारक मगध नरेश'** थी।
- हर्ष ने **'सुप्रभात स्रोत'** और **'अष्टमहाश्रीचैत्य संस्कृत स्रोत'** नामक दो ग्रंथों की रचना की थी।
- **प्रियदर्शिका**, **रत्नावली** तथा **नागानन्द** नामक तीन संस्कृत नाटक ग्रंथों की रचना हर्ष ने की थी।
- राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरी राजा **ग्रहवर्मा** के साथ हुआ।
- मालवा के शासक देवगुप्त ने **ग्रहवर्मा** की हत्या कर दी और **राज्यश्री** को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया।
- शशांक **शैव धर्म** का अनुयायी था। इसने **बोधिवृक्ष** (बोधगया) को कटवा दिया।
- **हर्ष** ने शशांक को पराजित करके **कन्नौज पर अधिकार** कर लिया तथा उसे अपनी राजधानी बनाया।
- चीनी यात्री **ह्वेनसांग हर्षवर्द्धन** के शासनकाल में **भारत** आया।
- ह्वेनसांग का यात्रा वृत्तांत चीनी ग्रंथ **'सी-यू-की'** से प्राप्त होता है।
- ह्वेनसांग के अनुसार गुप्त सम्राट **नरसिंह गुप्त बालादित्य** ने नालंदा में **80 फुट ऊँची** तांबे की बुद्ध प्रतिमा को स्थापित करवाया।
- हर्ष ने **641 ई.** में अपने दूत चीन भेजे तथा **643 ई.** एवं **645 ई.** में दो चीनी दूत उसके दरबार में आए।
- **हर्ष** ने कश्मीर के शासक से **बुद्ध के दंत अवशेष** बलपूर्वक प्राप्त किए।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग से मिलने के बाद हर्ष ने **बौद्ध धर्म** की महायान शाखा को **राज्याश्रय प्रदान** किया तथा वह पूर्ण रूप से बौद्ध बन गया।
- हर्ष के समय में **नालंदा महाविहार** महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रधान केन्द्र था।
- हर्ष के समय में प्रयाग में प्रत्येक पाँचवें वर्ष एक समारोह आयोजित किया जाता था जिसे **महामोक्षपरिषद्** कहा जाता था।
- **बाणभट्ट** हर्ष के दरबारी कवि थे। उन्होंने **हर्षचरित** एवं **कादम्बरी** की रचना की।
- प्रशासन की सुविधा के लिए हर्ष का साम्राज्य कई प्रांतों में विभाजित था। प्रांत को **भुक्ति** कहा जाता था। प्रत्येक भुक्ति का शासक **राजस्थानीय**, **उपरिक** अथवा **राष्ट्रीय** कहलाता था।
- हर्षचरित में प्रान्तीय शासक के लिए **'लोकपाल'** शब्द आया है।
- **ग्राम प्रशासन** की सबसे छोटी इकाई थी। ग्राम प्रशासन का प्रधान **ग्रामाक्षपटलिक** कहा जाता था।
- पुलिस कर्मियों को **चाट** या **भाट** कहा गया है। **दण्डपाशिक** तथा **दाण्डिक** पुलिस विभाग के अधिकारी होते थे।
- अश्व सेना के अधिकारियों को **वृहदेश्वर**, पैदल सेना के अधिकारियों को **बलाधिकृत या महाबलाधिकृत** कहा जाता था।
- हर्ष के प्रमुख पदाधिकारी थे–**कुमारामात्य** (उच्च प्रशासकीय सेवा में नियुक्त अधिकारी), **दीर्घध्वज** (राजकीय संदेशवाहक) एवं **सर्वगत** (गुप्तचर विभाग के सदस्य)।
- हर्षचरित में सिंचाई के साधन के रूप में **तुलायंत्र** (जलपंप) का उल्लेख मिलता है।